वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 435
ISBN-978-93-84003-27-2

सर्व गणधरदेव विधान

(1459 गणधरदेव विधान)

–रचयित्री –

**जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, दिव्य शक्ति,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि**

श्री ज्ञानमती माताजी

तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ के मोक्षकल्याणक श्रावण शु. सप्तमी (3 अगस्त 2014) के शुभ अवसर पर परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित 'श्री गौतम गणधर वर्ष' 2014-2015 के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	श्रावण शुक्ला सप्तमी, 3 अगस्त 2014	24/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

**कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**

सम्पादकीय

—पीठाधीश स्वास्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

ऊँ नमो मंगलं कुर्यात् , हीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

जैन परम्परा में उपयोग तीन प्रकार का माना गया है। अशुभोपयोग, शुभोपयोग एवं शुद्धोपयोग। इन तीनों उपयोगों में से कोई न कोई उपयोग प्रतिक्षण जीव में चला ही करता है, जिसमें से अशुभोपयोग तो दुर्गति का कारण पापरूप है, जो सर्वथा हेय है। बात है उपादेयता की, शेष दोनों शुभोपयोग व शुद्धोपयोग उपादेय हैं। चूंकि गृहस्थ श्रावक के शुभोपयोग के अलावा शुद्धोपयोग हो नहीं सकता इसलिए शुभोपयोग ही उपादेय ठहरता है। शुद्धोपयोग वीतराग चारित्र से अविनाभावी है और वीतराग चारित्र निर्ग्रन्थ मुनियों के ही संभव है अतः श्रावकों को प्रयत्नपूर्वक शुभोपयोग की भावना में ही प्रवृत्त होना चाहिए। पूजन पाठ, सामायिक, दान आदि समस्त धार्मिक क्रियायें पुण्यरूप हैं और शुभोपयोग हैं, इसलिए श्रावकों द्वारा शांति विधान, सिद्धचक्र विधान आदि मण्डल विधान करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। श्रावकों के षट् आवश्यक कार्यों में देवपूजा प्रथम आवश्यक कार्य है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, शांतिविधान, ऋषिमण्डल आदि छोटे–बड़े 100 विधानों की एवं 300 ग्रंथों की रचना की हैं। जिनमें से अभी कुछ विधान एवं ग्रंथ अप्रकाशित हैं। विधानों की श्रृंखला में यह 'श्री तीर्थंकर गणधर देव विधान' रचकर नूतनकृति के रूप में पूज्य माताजी ने हम सबको प्रदान किया है। यह विधान सभी रोग, शोक, दुख, दारिद्र्य को दूर करके सुख को प्रदान करने वाला है। भक्ति करते–करते भक्त जब एक दिन भगवान बन सकता है तो भक्ति से छोटे–छोटे कार्य तो सिद्ध हो ही जाएंगे। यह नूतन विधान सभी के लिए मंगलकारी हो, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें एवं वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जिनागम में लिखा है कि तीर्थंकर भगवान की दिव्यध्वनि तभी खिरती है जब उन तीर्थंकर के गणधर देव होते हैं। भगवान को केवलज्ञान होने के बाद जब तक उनके गणधर नहीं होते तब तक दिव्यध्वनि नहीं खिरती। जैसा कि आप लोग ग्रंथ में पढ़ते हैं कि भगवान महावीर स्वामी केवलज्ञान होने के बाद गणधर के अभाव में 66 दिन तक मौन रहे थे और जब सौधर्म इन्द्र की युक्ति से श्री गौतमस्वामी उनके प्रथम गणधर बनें तभी उनकी दिव्यध्वनि खिर गई। जैसाकि परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस 'तीर्थंकर गणधर देव विधान' में श्री गणधरदेव की पूजा में बहुत सुन्दर शब्दों में लिखा है–

गणधर बिना तीर्थेश की, वाणी न खिर सकती कभी।
निज पास में दीक्षा ग्रहें, गणधर भि बन सकते वही।।
तीर्थेश की ध्वनि श्रवण कर, उन बीज पद के अर्थ को।
जो ग्रथें द्वादश अंगमय, मैं जजूँ उन गणनाथ को।।

गणधर देवों की महिमा महान है जिन्हें कि भगवान के समवसरण में दीक्षा लेने का सौभाग्य प्राप्त होता है दीक्षा लेते ही उन्हें मनःपर्ययज्ञान प्रगट हो जाता है, चौंसठ ऋद्धियों के स्वामी हो जाते हैं और भगवान की दिव्यध्वनि को सुनकर अन्तर्मुहूर्त में द्वादशांग की रचना कर देते हैं।

वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकरों के कुल गणधरों की संख्या उत्तरपुराण ग्रंथ में 1452 हैं और तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ में श्रीयतिवृषभाचार्य ने 1459 लिखी है। पूज्य माताजी ने इस विधान में तिलोयपण्णत्ति के आधार से 1459 की संख्या ली है।

इस विधान में पूज्य माताजी ने सर्वप्रथम मंगलाचरण करते हुए श्रीगणधरदेव स्तोत्र संस्कृत में रचकर उसका पद्यानुवाद भी दिया है। जिससे स्तोत्र का अर्थ अच्छी तरह से हृदयंगम हो सके। स्तोत्र के बाद समवसरण में स्थित चौबीस तीर्थंकरों की पूजा दी है। उसके बाद श्री गणधरदेव पूजा में जम्बूद्वीप सम्बन्धी 34 कर्मभूमि में स्थित तीर्थंकरों के गणधर देवों की पूजा हैं। इस पूजा में 5 वलय हैं। प्रथम वलय में श्री ऋषभदेव के 84 गणधर देवों के 84 अर्घ्य एवं 1 पूर्णार्घ्य है। द्वितीय विलय में ऋषभदेव और महावीर स्वामी को छोड़कर शेष 22 तीर्थंकरों के गणधर देवों के 22 अर्घ्य एवं 1 पूर्णार्घ्य है।

तृतीय वलय में श्री महावीर स्वामी के 11 गणधर देवों के 11 अर्घ्य एवं 2 पूर्णार्घ्य हैं। इसमें द्वितीय पूर्णार्घ्य में 24 तीर्थंकरों के 1459 गणधर देवों को अर्घ्य चढ़ाया है। चतुर्थ वलय में जंबूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के गणधर देवों का 1 समुच्चय अर्घ्य एवं 1 पूर्णार्घ्य है। पंचम वलय में जंबूद्वीप के 32 विदेहक्षेत्र के गणधर देवों के 32 अर्घ्य एवं 1 पूर्णार्घ्य है। इसके बाद जयमाला है। जयमाला में बहुत सुन्दर शब्दों में पूज्य माताजी ने लिखा है कि–

आप गणइंद्र की भक्ति शोकापहा।
आप की भक्ति ही सर्व सौख्यावहा।।

अर्थात् आप गणधर देवों की भक्ति सभी शोक का नाश करने वाली और समस्त सुख को देने वाली है।

पूजा नं0 3 'ढाईद्वीप गणधर देव' पूजा में मध्यलोक में ढाईद्वीप तक 170 कर्मभूमियाँ हैं। उन सभी कर्मभूमियों के आर्यखंडों में त्रैकालिक सर्व गणधर देवों की पूजा है। इस पूजा में छठे वलय में 170 कर्मभूमि के गणधर देवों के 170 अर्घ्य हैं। जिसमें जम्बूद्वीप संबंधि 34 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य, पूर्वधातकीखंडद्वीप संबंधी 34 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य, पश्चिम धातकीखण्डद्वीप संबंधि 34 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य, पूर्व पुष्करार्धद्वीप संबंधी 34 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधी 34 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य, इस प्रकार 170 अर्घ्य एवं 5 पूर्णार्घ्य हैं। इसके बाद ढाईद्वीप सम्बन्धी 170 कर्मभूमि के आर्यखंडों में त्रैकालिक अनन्तानन्त सर्वगणधर देवों को पूर्णार्घ्य चढ़ाया है। इसके बाद जयमाला में ढाईद्वीप का वर्णन करते हुए बहुत ही सुन्दर भावों को संजोते हुए अंत में पूज्य माताजी ने लिखा है–

त्रैकालिक गणधर गुरू, कहे अनंतानंत।
तिन्हें अनंत नमोऽस्तु कर, पाऊँ सौख्य अनंत।।

अन्त में प्रशस्ति एवं मंगल आरती है। यह विधान सम्पूर्ण विघ्न बाधाओं को दूर करने वाला है एवं संपूर्ण ऋद्धि–सिद्धि को प्रदान करने वाला है। इस विधान को करने कराने वाले सभी भव्य जीव नियम से एक दिन क्रम से मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करेंगे।

विधान की रचयित्री पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की कृपा प्रसाद से भक्तों को नित्य नए–नए विधानों को पढ़ने का, कराने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

दो शब्द

—आर्यिका सुव्रतमती

स्वदोष–शान्त्यावहितात्मशांतिः शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद् भवक्लेश–भयोपशान्त्यै शांतिर्जिनो मे भगवान्शरण्यः।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं, इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि, वर्तमान कालीन पिच्छीधारी सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित, परमपूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना की है। प्रतिक्षण पूज्य माताजी की यह भावना रहती है कि किस तरह से मैं वर्तमान में सभी भव्य जीवों को आगम के ज्ञान से, पूर्वाचार्यों की वाणी से सिंचित करूँ।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम हैं। जब लोग पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों की पंक्तियों को पढ़ते हैं तो वे भक्ति में भाव विभोर हो जाते हैं। भक्ति में उनके पैर थिरकने लग जाते हैं और वे भक्ति भाव से पूजा कर असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं। जब भगवान के दर्शनमात्र से पाप कर्म निर्जीर्ण हो जाते हैं तो उनकी पूजा, भक्ति करने से तो विशेष पुण्य फल प्राप्त होता है।

धवला पु.–6 में आचार्य श्री वीरसेनस्वामी ने जिनबिम्ब दर्शन के महत्त्व का कितना सुन्दर वर्णन किया है–

दर्शनेन जिनेन्द्राणां पापसंघातकुंजरम्।
शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्रहतो यथा।।

अर्थात् जिनेन्द्रों के दर्शन से पापसंघातरूपी कुंजर के सौ टुकड़े हो जाते हैं, जिस प्रकार कि वज्र के आघात से पर्वत के सौ टुकड़े हो जाते हैं।

देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति, पूजा विशेष फल को देने वाली है। पूज्य माताजी की वाणी जिनवाणी है। लेखनी में सरस्वती का वास है। जिनागम का सार बताने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों पर 'सिद्धान्तचिन्तामणि' नाम की संस्कृत टीका लिखने वाली, राष्ट्रगौरव, युगनायिका, सिद्धान्तचक्रेश्वरी, वाग्देवी, डी. लिट्, आदि अनेक उपाधियों से अलंकृत पूज्य माताजी इस युग के लिए वरदान हैं। इस विधान की प्रूफ रीडिंग के माध्यम से मुझे जो स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ है, वह मेरे भव भ्रमण को दूर कर शीघ्र ही श्रुतज्ञान, केवलज्ञान की प्राप्ति करावे, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान— टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि— आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति— अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र—** गोयल, **नाम—** कु. मैना

माता-पिता— श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत— ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा— चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा— वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व— अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि— सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा— हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा— पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा— 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा— जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	श्री गणधरदेव स्तोत्र (संस्कृत)	1
3.	श्री गणधरदेव स्तोत्र (पद्यानुवाद)	3
4.	चौबीस तीर्थंकर पूजा	5
5.	श्री गणधरदेव पूजा	10
6.	प्रथम वलय मे 84 अर्घ्य	12
7.	द्वितीय वलय में 22 अर्घ्य	28
8.	तृतीय वलय में 11 अर्घ्य	32
9.	चतुर्थ वलय में जंबूद्वीप ऐरावत क्षेत्र के गणधर देवों का 1 अर्घ्य	34
10.	पंचम वलय में जंबूद्वीप के बत्तीस विदेहक्षेत्र के गणधर देवों के 32 अर्घ्य	35
11.	जयमाला	41
12.	ढाईद्वीप गणधरदेव पूजा	45
13.	छठे वलय में 170 कर्मभूमि के श्री गणधर देवों के 170 अर्घ्य	48
14.	जयमाला	62
15.	प्रशस्ति	65
16.	श्री गणधरस्वामी की मंगल आरती	66
17.	श्री गौतमगणधर चालीसा	67
18.	प्रयागतीर्थ वन्दना	69
19.	भजन	72

सर्व गणधरदेव विधान का मण्डल

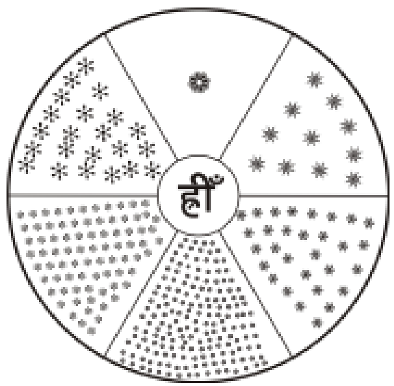

प्रथम कोष्ठक में	84 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठक में	22 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठक में	11 अर्घ्य
चतुर्थ कोष्ठक में	1 अर्घ्य
पंचम कोष्ठक में	32 अर्घ्य
छष्ठ कोष्ठक में	170 अर्घ्य
कुल –	320 अर्घ्य

कुल संख्या—पूजा—3, अर्घ्य—320, पूर्णार्घ्य—12, जयमाला—3।

सर्व गणधरदेव विधान

(1459 गणधरदेव विधान)

मंगलाचरण

चतुर्विंशतितीर्थेशान् , धर्मतीर्थकरान् नुवे।
तेषां गणधरान् देवान्, नौमि सर्वार्थसिद्धये।।1।।

श्री गणधरदेव स्तोत्र

(श्री सकलकीर्ति आचार्यकृत)

जिनान् जिताराति-गणान् गरिष्ठान्, देशावधीन् सर्वपरावधींश्च।
सत्कोष्ठ-बीजादि-पदानुसारीन्, स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै।।1।।

संभिन्नश्रोत्रान्वित-सन्मुनीन्द्रान्, प्रत्येकसम्बोधित-बुद्धधर्मान्।
स्वयंप्रबुद्धांश्च विमुक्तिमार्गान्, स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै।।2।।

द्विधा-मनःपर्ययचित्प्रयुक्तान्, द्विपंचसप्त-द्वयपूर्वसक्तान्।
अष्टाङ्गनैमित्तिक-शास्त्रदक्षान्, स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै।।3।।

विकुर्वणाख्यर्द्धि-महाप्रभावान्, विद्याधरां-श्चारणप्रर्द्धिप्राप्तान्।
प्रज्ञाश्रितान्नित्यखगामिनश्च, स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै।।4।।

आशीर्विषान् दृष्टिविषान्मुनीन्द्रा-नुग्रातिदीप्तोत्तम-तप्ततप्तान्।
महातिघोर-प्रतपःप्रसक्तान्, स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै।।5।।

वन्द्यान् सुरैर्घोरगुणांश्च लोके, पूज्यान् बुधैर्घोरपराक्रमांश्च।
घोरादिसंसद्-गुणब्रह्मयुक्तान्, स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै।।6।।

आमर्द्धिखेलर्द्धि-प्रजल्लविट्प्र-सर्वर्द्धिप्राप्तांश्च व्यथादिहंतृन्।
मनोवचःकाय-बलोपयुक्तान्, स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै।।7।।

सत्क्षीरसर्पि-र्मधुरा-मृतर्द्धीन्, यतीन् वराक्षीण-महानसांश्च।
प्रवर्धमानां-स्त्रिजगत्-प्रपूज्यान्, स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै।।8।।

सिद्धालयान् श्रीमहतोऽतिवीरान्, श्रीवर्द्धमानर्द्धि-विबुद्धिदक्षान्।
सर्वान् मुनीन् मुक्तीवरानृषीन्द्रान्, स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै।।9।।

नृसुर-खचरसेव्या विश्वश्रेष्ठर्द्धिभूषा,
विविधगुणसमुद्रा मारमातङ्गसिंहाः।
भवजलनिधिपोता वन्दिता मे दिशन्तु,
मुनिगण-सकलान् श्रीसिद्धिदाः सदृषीन्द्रान्।।10।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पंजलिं क्षिपेत्।

श्री गणधरदेव स्तोत्र

पद्यानुवाद (चौबोल छन्द)

जीता अंतः शत्रूगण को, ''जिन'' कहलाए गरिष्ठ भी।
देशावधि परमावधि सर्वावधि, संयुत मुनिराज सभी।।
कोष्ठ बीज आदिक ऋद्धीयुत, पदानुसारी ऋद्धीयुत।
सब गणधर की स्तुति करूँ मैं, उन गुणप्राप्ति हेतु संतत।।1।।

जो संभिन्न श्रोतृ ऋद्धीयुत, स्वयंबुद्ध मुनिनाथ महान्।
जो प्रत्येकबुद्ध संबोधित, बुद्धिसहित बहुत ऋद्धीमान्।।
वे गणेश गुरुदेव विमुक्तीमार्ग, कहें साक्षात् महित।
सब गणधर की स्तुति करूं मैं, उन गुण प्राप्ति हेतु संतत।।2।।

ऋजुमति विपुलमती मनःपर्यय, ज्ञानी मुनिपुंगव ध्यानी।
दशपूर्वी चौदशपूर्वी मुनि, श्रुतपारंगत शुभ ध्यानी।।
शुभ अष्टांग महा नैमित्तिक, गुरुवर महा ऋद्धिसंयुत।
सब गणधर की स्तुति करूं मैं, उन गुण प्राप्ति हेतु संतत।।3।।

विक्रियऋद्धी महाप्रभावी, प्राप्त सुविद्याधर ऋद्धी।
चारण ऋद्धीसंयुत प्रज्ञा, श्रमण करें प्रज्ञा ऋद्धी।।
नित आकाशगमन ऋद्धीयुत, विहरण करते वे संयत।
सब गणधर की स्तुति करूं मैं, उन गुण प्राप्त हेतु संतत।।4।।

आशीविष ऋद्धी दृष्टीविष, ऋद्धि सहित मुनिराज महान्।
उग्र तपोयुत दीप्ततपोयुत, उत्तम तप्त तपोयुतमान्।।
महातपोयुत घोर तपोयुत, तपश्चरण ऋद्धी संयुत।
सब गणधर की स्तुति करूं मैं, उन गुण प्राप्त हेतु संतत।।5।।

सुरगण वंदित घोरगुणों युत, वरऋद्धीधारी मुनिगण।
बुधजन पूजित घोरपराक्रम, श्रेष्ठ ऋद्धिधारी यतिगण।।
घोरगुणादिक ब्रह्मचर्य ऋद्धीधर खेचरनुत संयत।
सब गणधर की स्तुति करूं मैं, उन गुण प्राप्त हेतु संतत।।6।।

आमौषधि क्ष्वेल्लौषधि जल्लौषधि, विप्रुषऔषधि ऋद्धी।
सर्वौषधि ऋद्धी से सबकी, व्यथा हरें ये सब ऋद्धी।।
मनबल वचबल कायबली, ऋद्धी से युत सुरगण संस्तुत।
सब गणधर की स्तुति करूं मैं, उन गुण प्राप्त हेतु संतत।।7।।

क्षीरस्रवी घृतस्रवी मधुरस्रावी, अमृतस्रावी ऋद्धी।
वर अक्षीणमहानस युत, अक्षीण महालय भी ऋद्धी।।
वर्धमान ऋद्धीयुत त्रिभुवन, पूज्य यतीगण जग से नुत।
सब गणधर की स्तुति करूं मैं, उन गुण प्राप्त हेतु संतत।।8।।

सिद्धायतन नमूं मैं भगवन्, महति वीर अतिवीर महान्।
वर्धमान बुद्धी ऋद्धी में, दक्ष महा ऋषिराज प्रधान।।
सभी श्रेष्ठ मुनि पुंगव ऋषिवर, मुक्ति वधूवर मुनिगण नुत।
सब गणधर की स्तुति करूं मैं, उन गुण प्राप्त हेतु संतत।।9।।

नरसुर खेचर गण से सेवित, सकल श्रेष्ठ ऋद्धी भूषित।
विविधगुणों के सागर, कामदेव गजहेतु सिंह सदृश।।
भव जलनिधि के लिए पोतसम, सिद्धि प्रदायक ऋद्धि धरें।
मुझसे वंदित श्रीसिद्धिप्रद, मुनिगण सकल प्रदान करें।।10।।

–दोहा–

चौदह सौ उनसठ प्रमित[1], गणधर देव प्रसिद्ध।
इनके वंदनमात्र से, सर्वकार्य हों सिद्ध।।11।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

---

1. उत्तरपुराण में 1452, गणधर संख्या है तथा तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ में 1459 संख्या है। यहाँ तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ के आधार से यह विधान है।

पूजा नं. 1

चौबीस तीर्थंकर पूजा

अथ स्थापना–गीताछंद

वृषभादि चौबिस तीर्थकर, इस भरत के विख्यात हैं।
जो प्रथित जंबूद्वीप के, संप्रति जिनेश्वर ख्यात हैं।।
अंतिम जिनेश्वर तीर्थ में, सम्यक्त्व निधि को पायके।
थापूँ यहां पूजन निमित, अति चित्त में हरषाय के।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं–स्रग्विणी छन्द

देवगंगा सलिल स्वर्ण झारी भरूँ।
नाथ पादाब्ज में तीन धारा करूँ।।
श्री वृषभ आदि चौबीस जिनराज को।
पूजते ही लहूं स्वात्म साम्राज्य को।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वापामीति स्वाहा।

गंध केशर घिसा के कटोरी भरूँ।
आपके पाद पंकज समर्चन करूँ।।श्री वृषभ.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्वापामीति स्वाहा।

चँद्र की चांदनी सम धवल शालि हैं।
जो जजें पुंज से वे सुकृत–शालि हैं।। श्री वृषभ.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतं निर्वापामीति स्वाहा।

कुंद मचकुंद बेला चमेली लिये।
कामहर नाथ पद में समर्पित किये।।
श्री वृषभ आदि चौबीस जिनराज को।
पूजते ही लहूं स्वात्म साम्राज्य को।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वापामीति स्वाहा।

पूरिका लड्डुओं से भरूँ थाल मैं।
पूजहूँ आपको क्षुध् व्यथा नाशने।।श्री वृषभ.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वापामीति स्वाहा।

दीप कर्पूर की ज्योति से पूजते।
ज्ञान उद्योत हो मोह अरि छूटते।।श्री वृषभ.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वापामीति स्वाहा।

धूप दशगँध ले अग्नि में खेवते।
आत्म सौरभ उठे नाथ पद सेवते।।श्री वृषभ.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वापामीति स्वाहा।

आम अंगूर केला अनंनास ले।
नाथ पद पूजते मुक्ति संपति मिले।। श्री वृषभ.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वापामीति स्वाहा।

तोय गँधादि वसु द्रव्य ले थाल में।
अर्घ्य अर्पण करूँ नायके भाल मैं।। श्री वृषभ.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

सोरठा

तीर्थंकर परमेश, तिहुंजग शांतिकर सदा।
चउसंघ शांती हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पद पद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः

जयमाला

–शंभु छंद –

जय ऋषभदेव जय अजितनाथ, संभवजिन अभिनंदन जिनवर।
जय सुमतिनाथ जय पद्मप्रभ, जिनसुपार्श्व चन्द्रप्रभ जिनवर।।
जय पुष्पदंत शीतल श्रेयांस, जय वासुपूज्य जिन तीर्थंकर।
जय विमलनाथ जिनवर अनंत, जय धर्मनाथ जय शांतीश्वर।।1।।

जय कुंथुनाथ अरनाथ मल्लि, जिन मुनिसुव्रत तीर्थेश्वर की।
जय नमिजिन नेमिनाथ पारस, जय महावीर परमेश्वर की।।
ये चौबीसों तीर्थंकर ही, भव्यों के शिवपथ नेता हैं।
ये कर्म अचल के भेत्ता हैं, त्रिभुवन के ज्ञाता दृष्टा हैं।।2।।

मलरहित[1] पसीना रहित[2], क्षीर[3] सम रुधिर रूप[4] अतिशय सुन्दर।
उत्तम संहनन[5] श्रेष्ठ आकृति[6], शक्ती अनंत[7] सुरभित[8] तनुधर।।
इक सहस आठ लक्षणधारी[9], प्रियहित वचनामृत[10] मन हरते*।।
दश अतिशय जन्मसमय से ही, तीर्थंकर के अद्‌भुत प्रगटें।।3।।

चउ सौ कोशों तक हो सुभिक्ष[1], आकाश गमन[2] नहिं प्राणी[3] वध।
नहिं भोजन[4] नहिं उपसर्ग[5] तुम्हें, सब विद्या के ईश्वर[6] चउमुख[7]।।
नहिं छाया[8] नहिं टिमकार नेत्र[9], नखकेश[10] नहीं बढ़ते प्रभु के+।
घाती के क्षय से दश अतिशय, केवलज्ञानी जिन के प्रगटे।।4।।

वर अर्ध मागधी भाषा[1] हो, आपस में मैत्रीभाव[2] धरें।
सब ऋतु के फल अरु फूल खिले[3], भू[4] रत्नमयी सौंदर्य धरे।।
सुरभित[5] अनुकूल हवा चलती, सब जन परमानंदित[6] होते।
वायूकुमार सौगंध्य वायु से, भू[7] को धूलिरहित करते।।5।।

गंधोदक वर्षा मेघदेव[8], करते हरियाले[9] खेत खिलें।
प्रभु के विहार में स्वर्ण कमल[10], सौगंधित जिनपद तले खिलें।।

---

*ये दश अतिशय जन्म से ही तीर्थंकर के होते हैं।

+केवलज्ञान प्रगट होते ही ये दश अतिशय प्रगट हो जाते हैं

ऋतु शरद सदृश आकाशविमल[11], अति स्वच्छ दिशायें[12] शोभ रहीं।
सुरपति आज्ञा से देव परस्पर, आह्वानन कर रहें सही।।6।।

यक्षेन्द्रों के मस्तक ऊपर, वरधर्म चक्र[13] अतिशय चमके।
तीर्थंकर प्रभु के आगे आगे, हजार आरों[14] से चमके*।।
तरुवर अशोक[1] सिंहासन[2] छत्रत्रय[3] भामंडल[4] सुरदुंदुभि[5]।
चौंसठ चामर[6] सुर पुष्पवृष्टि[7], दिव्यध्वनि[8] फैले योजन तक+।।7।।

देवोपनीत चौदह अतिशय, अठ प्रातिहार्य महिमाशाली।
दर्शन व ज्ञान सुख वीर्य चार, आनन्त्य चतुष्टय गुणशाली।।
ये छ्यालिस गुण अर्हंतों के, घाती के क्षय से होते हैं।
सिद्धों के आठ कर्म क्षय से, उत्कृष्ट आठ गुण होते हैं।।8।।

जो क्षुधा तृषा भय क्रोध जरा, चिंता विषाद मद विस्मय हैं।
रति अरति राग निद्रा मृत्यू, जनि मोह रोग व पसीना[1] हैं।।
ये दोष अठारह माने हैं, इनसे नहिं बचा कोई जग में।
जो इनको जीते वे जिनेन्द्र, सौ इन्द्रों से नत त्रिभुवन में।।9।।

तीर्थंकर ज्ञान ज्योति भास्कर, भविजन मन कमल विकासी हैं।
अज्ञान अंधेरा दूर करें, सब लोकालोक प्रकाशी हैं।।
इन तीर्थंकर की दिव्यध्वनी, मंगलकरणी भवदधि तरणी।
चिन्मय चिंतामणि चेतन को, परमानंदामृत निर्झरणी।।10।।

जिन भक्ती गंगा महानदी, सब कर्म मलों को धो देती।
मुनिगण का मन पवित्र करके, तत्क्षण शिवसुख भी दे देती।।
भक्तों के लिए कामधेनू, सब इच्छित फल को फलती है।
मेरे भी 'ज्ञानमती' सुख को, पूरण में समरथ बनती है।।11।।

---

*ये चौदह अतिशय देवकृत हैं।

+ये 8 प्रतिहार्य हैं।

1. ये 18 दोष हैं।

–दोहा –

तीर्थंकर चौबीस ये, गुणरत्नाकर सिद्ध।
नमूँ अनंतों बार मैं, मिले रत्नत्रय निद्ध।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितश्रीवृषभादिवर्धमानान्तेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु-छंद–

चौबिस जिनवर के समवसरण में, प्रभु दिव्यध्वनी को सुनते हैं।
बारह अंगों में ग्रथित करें, श्रुततीर्थ प्रवर्तन करते हैं।।
इन गणधर देवों को यजते, संपूर्ण विघ्न व्याधी टलतीं।
सज्ज्ञानमती केवल होती, संपूर्ण ऋद्धि सिद्धी मिलती।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. 2

श्री गणधरदेव पूजा

–अथ स्थापना-गीता छंद–

गणधर बिना तीर्थेश की, वाणी न खिर सकती कभी।
निज पास में दीक्षा ग्रहें, गणधर भि बन सकते वही।।
तीर्थेश की ध्वनि श्रवणकर, उन बीज पद के अर्थ को।
जो ग्रथें द्वादश अंगमय, मैं जजूँ उन गणनाथ को।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरगणधरदेवसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरगणधरदेवसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरगणधरदेवसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–भुजंगप्रयात

पयोराशि का नीर निर्मल भराऊँ।
गुरू के चरण तीन धारा कराऊँ।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि[1] को मैं।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरगणधरदेवेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधीत चंदन लिये भर कटोरी।
जगत्तापहर चर्च हूँ हाथ जोरी।।जजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरगणधरदेवेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

1. समुद्र।

धुले श्वेत अक्षत लिये थाल भरके।
धरूँ पुंज तुम पास बहु आशधर के।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरगणधरदेवेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही केतकी पुष्प की माल लाऊँ।
सभी व्याधिहर आप चरणों चढ़ाऊँ।।जजूं.।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरगणधरदेवेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मिष्ट पक्वान्न अमृत सदृश ले।
परमतृप्ति हेतू चढ़ाऊँ तुम्हें मैं।।जजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरगणधरदेवेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की जगमगाती भली है।
जजत ही तुम्हें ज्ञानज्योती जली है।।जजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरगणधरदेवेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगुरु धूप खेते उड़े धूम्र नभ में।
दुरित कर्म जलते गुरूभक्ति वशतें।।जजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरगणधरदेवेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्नास नींबू बिजौरा लिये हैं।
तुम्हें अर्पते सर्व वांछित लिये हैं।।जजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरगणधरदेवेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

लिये थाल में अर्घ है भक्ति भारी।
गुरू अर्चना है सदा सौख्यकारी।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

गणधर पदधारा करूँ, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा जगत में, आत्यंतिक सुख देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(प्रथम वलय में 84 अर्घ्य)

–सोरठा–

स्वानुभूति से आप, नित आतम अनुभव करें।
द्वादश गण के नाथ, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

अथ प्रथमवलये मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(श्रीऋषभदेव के 84 गणधर देवों के अर्घ्य)

–शंभु छंद–

श्रीऋषभदेव के तृतीय पुत्र, मां यशस्वती के नंदन हो।
तज पुरिमतालपुर नगर राज्य, मुनि बने जगत अभिनंदन हो।।
सब ऋद्धि समन्वित गणधर गुरु, हे 'ऋषभसेन' तुमको वंदन।
तुम प्रथम तीर्थंकर के पहले, गणधर हम करते नित्य यजन।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीऋषभसेनगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीकुंभ' गणीश्वर द्वादशगण, के प्रमुख नाथ के गुण गाते।
सब गुणरत्नों से भरित आप, नित आत्म सुधारस आस्वादें।।
सब विघ्न विनाशें भक्तों के, इसलिये भक्ति से हम पूजें।
गणधर गुरु से वंदित प्रभुवर, उन वंदत भवदुख से छूटें।।2।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीकुंभगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री दृढ़रथ' गणधर ऋषभदेव, के समवसरण के षट्पद हो।
भक्ती से निजपरमानंदामृत, पीते आप तृप्ति युत हो।।
सम्पूर्ण शास्त्र के ज्ञाता हो, फिर भी जिनवर के दास बने।
हम पूजें ऋषभदेव गणधर, पूरे हों वांछित कार्य घने।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीदृढ़रथगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री शतधनु' गणधर सप्त ऋद्धि-धारी श्रुत वारिधि पारंगत।
निज शुद्ध बुद्ध परमात्मतत्त्व, ध्याते फिर भी प्रभु गुण में रत।।
उन प्रभु आदीश्वर के गुण को, मैं भी गाऊं नित भक्ति करूँ।
जल आदिक अर्घ्य चढ़ा करके, निज सम्यग्दर्शन शुद्धि करूं।।4।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीशतधनुगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीवृषभेश्वर के समवसरण, में कहे 'देवशर्मा' गणधर।
ये भक्त जनों के कष्ट हरें, इनको जो पूजें रुचि धरकर।।
इनसे वंदित चरणकमल जिन, उन प्रभु को अर्चूं श्रद्धा से।
श्रीऋषभदेव गणधर शरणा, जो पावें छूटें विपदा से।।5।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीदेवशर्मागणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीदेवभाव' गणधर स्वामी, मनपर्ययज्ञानी जगत्राता।
व्यवहार रतनत्रय के बल से, निश्चय रत्नत्रय को साधा।।
श्रीऋषभदेव सा गुरु पाया, निज ज्ञानज्योति से आलोकित।
उन गुरु के चरणकमल पूजूं, निज को पाऊं निज से शोभित।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीदेवभावगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीनन्दन' गणधर गुरु को नित, वंदूं आनन्दित होकर के।
वे ज्ञानानन्द स्वभावी थे, प्रतिक्षण आत्मा को ध्याकर के।।

वे ऋषभदेव के शिष्य बने, उस भव से ही शिवधाम लिया।
मैं पूजूं अर्घ्य चढ़ाकर के, गणधर गुरु को शिर नमित किया।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीनन्दनगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीसोमदत्त' गणधर गुणधर, संपूर्ण परिग्रह के त्यागी।
निज को निज में निज के द्वारा, नित ध्याते निजगुण अनुरागी।।
श्रीऋषभदेव के निकट रहें, अविरल जिनभक्ती में रत थे।
मैं पूजूं अर्घ्य चढ़ा करके, मेरे भव-भव के फंद कटें।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसोमदत्तगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीसूरदत्त' गणधर स्वामी, संयतमुनि नग्न दिगम्बर थे।
अट्ठाइस मूलगुणों से युत, बहुविध उत्तर गुणधारी थे।।
ये ऋषभदेव के चरणकमल में, नित नमते उनको वंदूं।
गणधर गुरु को मन वच तन से, पूजत ही पापअरी खंडूं।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसूरदत्तगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीऋषभदेव के सन्निध में, गणधर गुरु 'वायूशर्मा' थे।
सब कर्म धूलि को उड़ा-उड़ा, अगणित गुणयुत शुचिधर्मा थे।।
संयमबल से त्रयविध अवधी, पाकर निरवधि गुण रत्नाकर।
उन गुरु के चरणों को पूजूं, पा जाऊं अनवधि सुखसागर।।10।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवायुशर्मागणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीयशोबाहु' गणधर गुणधर, निजगुण के यश को फैलाया।
जिसमें धर्मामृत भरा हुआ, इस अतुल तीर्थ में नहलाया।।
भाक्तिक जन इसमें नहा नहा, निज पाप मलों को धोते थे।
उन तीर्थंकर गणधर यजते, सब वाञ्छित पूरे होते थे।।11।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य यशोबाहुगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवाग्नी' गणधर ने तप बल, से सर्व ऋद्धियां पाई थीं।
ध्यानानल में सब कर्म जला, कर सर्वसिद्धियां पायी थीं।।
श्रीऋषभदेव के चरणकमल, के भ्रमर बने थे जग त्राता।
उन गुरु चरणों को वंदन कर, मैं पूजूं मिले सर्व साता।।12।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीदेवाग्निगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-अडिल्ल छंद-

बुद्धि ऋद्धि में अवधि ज्ञान है ऋद्धि जो।
अणु से महास्कंध पर्यंते मूर्त को।।
जाने गणधर 'अग्निदेव' सब ऋद्धियुत।
उनश्री गुरु को भी मैं पूजूं सिद्धिकृत।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीअग्निदेवगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुज लोक के भीतर चिंतित वस्तु को।
जाने मूर्तिक द्रव्य मनःपर्यय ज्ञान वो।।
इन ऋद्धीयुत 'अमितगुप्त' गणनाथ को।
उनश्री गुरु तीर्थंकर गणधर नित जजों।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य अमितगुप्तगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक प्रकाशे केवलज्ञान जो।
सब ऋद्धीयुत पाते जो इस ऋद्धि को।।
उन 'मित्राग्नी' गणधर को मैं नित जजूं।
श्रीऋषभदेव को पूजूं निज आतम भजूं।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमित्राग्निगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्द संख्यातों अर्थ अनंतों से युते।
अनंत लिंगों साथ बीजपद जानते।।
बीजऋद्धि युत भी 'हलभृत' गणनाथ हैं।
उनके गुरु तीर्थंकर त्रिभुवन नाथ हैं।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीहलभृतगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्दरूप बीजों को मति से जो धरें।
मिश्रण बिन बुद्धी कोठे में जो भरें।।
गणधरदेव 'महीधर' जिनवर भक्त थे।
गणधर गुरु तीर्थंकर प्रभु के हम जजें।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमहीधरगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु उपदेश सुपाय एक पद को ग्रहें।
उसके ऊपर या पहले के पद लहें।।
उभय ग्रहें या त्रयविध पदानुसारिणी।
गुरु 'महेन्द्र' की जिनभक्ती भवहारिणी।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमहेन्द्रगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रोत्रेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के बाहिरे।
अक्षर अनक्षरात्मक वच सुन उत्तरें।।
गुरु 'वसुदेव' संभिन्नश्रोतृ ऋद्धि धरें।
गणधर गुरु तीर्थंकर के गुण उच्चरें।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवसुदेवगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसनेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के बाह्य जो।
संख्यातों योजन नाना रस स्वाद को।।
जो जाने दूरास्वादन ऋद्धी धरें।
देव 'वसुंधर' जिनभक्ती से भव तरें।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवसुंधरगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के बाह्य भी।
संख्यातों योजन स्पर्श को जानहीं।।
'अचलगुरु' दूरस्पर्श ऋद्धि आदिक सहित।
गणधर गुरु ऋषभेश्वर के त्रिभुवन महित।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीअचलगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के बाह्य भी।
संख्यातों योजन सुगंध को जानहीं।।
'मेरू' गणधर दूरघ्राण हम ऋद्धी धरें।
गणधर गुरु को पूजत हम समसुख भरें।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमेरुगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्णेन्द्रिय उत्कृष्ट विषय के बाहिरे।
संख्यातों योजन मनुष्य पशु अक्षरे।।

पृथक् पृथक् सुन लेय 'मेरुधन' गणधरा।
उन गुरुवर को जजूं सदा वे सुखकरा।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमेरुधनगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र से बाह्य जो।
चक्रवर्ति के नेत्रविषय से अधिक वो।।
दूरदर्शिता ऋद्धि 'मेरुभूती' धरें।
तीर्थंकर के चरणकमल में नति करें।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमेरुभूतिगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद–

रोहिणी प्रभृति महाविद्यायें, पांच शतक मानी हैं।
लघु विद्या अंगुष्ठप्रसेना, प्रभृति सप्तशत ही हैं।।
दशम पूर्व पढ़ने पर च्युत, नहिं दशपूर्वित्व कहाते।
गुरु 'सर्वयश' ऋषभेश्वर के, गुणयश को नित गाते।।25।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसर्वयशगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह अंग चतुर्दश पूरब, पढ़कर श्रुतकेवलि हों।
ऋद्धि चतुर्दशपूर्वि धरें नित, 'सर्वयज्ञ' गणधर वो।।
ऋषभदेव के समवसरण में, धर्मध्यान के ध्यानी।
उनको नितप्रति वंदूं पूजूं, बनूं आत्म श्रद्धानी।।26।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसर्वयज्ञगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभ्र भौम अंग स्वर व्यंजन, लक्षण चिन्ह स्वप्न हों।
आठ निमित्तों से सब के शुभ, अशुभ बताते मुनि जो।।
वे अष्टांगनिमित्त ऋद्धिधर, 'सर्वगुप्त' गणधर गुरु।
ऋषभदेव की भक्ती में रत, नमूं नमूं मैं रुचिधर।।27।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसर्वगुप्तगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औत्पत्तिक पारिणामिक विनयिक, कही कर्मजा बुद्धी।
प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि चउविधधर, गणधर गुरु बनते भी।।

नाम 'सर्वप्रिय' ऋषभदेव के, शिष्य सर्वजग त्राता।
जजूं तीर्थंकर के गणधर को, पाऊं निजसुख साता।।28।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसर्वप्रियगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु उपदेश बिना कर्मों के, उपशम से तप बल से।
जो प्रत्येक बुद्धि ऋद्धी है, ऋषियों के ही प्रगटे।।
'सर्वदेव' गणधर गुरुवर इस, ऋद्धि सहित सुखकारी।
उनको गुरु ऋषभेश्वर को, भी पूजूं भवदुखहारी।।29।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसर्वदेवगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब परमत को सुरपति को भी, जो कर सकें निरुत्तर।
इन वादित्वऋद्धियुत गणधर, को वंदूं अंजलिकर।।
'सर्वविजय' से वंदित जिनवर, चरणकमल शिर नाऊं।
गणधरगुरु को तीर्थंकर को, जजत आत्मसुख पाऊं।।30।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसर्वविजयगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणू बराबर छिद्रों में भी, जो ऋषि घुस कर बैठें।
चक्रवर्ति का कटक बना दें अद्भुत विक्रिय करके।।
ऐसे अणिमा ऋद्धि विभूषित, 'विजयगुप्त' गणधर को।
नमूं इन्हों को गुरु तीर्थंकर, जजूं स्वात्मसुख झट हो।।31।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीविजयगुप्तगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु बराबर तनु कर सकते, महिमाऋद्धि धरें जो।
विक्रिय ऋद्धी के बल से, गुरु पर उपकार करें वो।।
'विजयमित्र' गणधर गुरु इन, सब ऋद्धि समन्वित माने।
उनको नितप्रति वंदत पूजत, कर्म कालिमा हाने।।32।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीविजयमित्रगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघिमा ऋद्धि सहित ऋषि वायू सम हल्का तनु कर सकते।
जन जन के उपकार हेतु ही, ऋद्धि प्रयोगें रुचि से।।
'श्रीविजयिल' गणधर गुरु ऐसे, उनके चरण नमूं मैं।
श्रीऋषभेश्वर को नित पूजूं, आतम सौख्य भरूं मैं।।33।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीविजयिलगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अपराजित' गणधर प्रभु जग में सदा विजयशाली थे।
अधिक भारयुत वज्रसदृश तनु, तप बल से धर सकते।।
गरिमा ऋद्धि सहित को वंदूं, तपमहिमा की गरिमा।
वंदूं ऋषभदेव गणधर को, पाऊं तप की महिमा।।34।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीअपराजितगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमी पर बैठे ही बैठे, सूर्य चंद्र छू सकते।
अंगुलि से ही मेरुशिखर, छूकर मस्तक से नमते।।
प्राप्तिनाम विक्रिया सहित, 'वसुमित्र' गणाधिप वंदूं।
तीर्थंकर श्रीआदिनाथ के, शिष्यों को अभिनंदूं।।35।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवसुमित्रगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू पर भी जलसम अवगाहे, जल में भू सम चलते।
इस प्राकाम्यविक्रिया बल से अद्भुत महिमा धरते।।
'विश्वसेन' गणधर को वंदूं, नाना ऋद्धि सहित जो।
आदिनाथ के चरणकमल के, भ्रमर भक्ति तत्पर वो।।36।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीविश्वसेनगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद–

जग में प्रभुता वृद्धि, यह ईशित्व कहावे।
'साधुषेण' के सिद्ध, सब जन से यश पावें।।
उन गणधर से पूज्य, ऋषभदेव तीर्थंकर।
जजूं भक्ति से नित्य, पाऊं सौख्य निरंतर।।37।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसाधुषेणगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन वश में होय, ऋद्धि वशित्व कहावे।
'सत्यदेव' गणदेव, नाना ऋद्धि धरावें।।
इनसे पूजित पाद, ऋषभदेव भगवंता।
करूं निरंतर जाप, पाऊं सौख्य अनंता।।38।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसत्यदेवगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके बल से शैल, शिला आदि के मधि से।
वृक्ष आदि में छेद, किये बिना ही चलते।।
विक्रिय अप्रतिघात, 'देवसत्य' गुण धरते।
ऋषभदेव के पास, रहें द्विदश गण धरते।।39।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीदेवसत्यगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धी से साधु, हों अदृश्य नहिं दिखते।
विक्रिय अंतर्धान, तप बल से उपजे।।
'सत्यगुप्त' गणनाथ, बहुविध ऋद्धी धारी।
उन गुरु आदिनाथ, जजूं सर्वहितकारी।।40।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसत्यगुप्तगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकहि साथ अनेक, रूप बना सकते जो।
कामरूप यह ऋद्धि, तप बल से प्रगटे जो।।
'सत्यमित्र' गणनाथ ऋषभदेव गुण गाते।
नमूं नमाकर माथ, तीर्थंकर गुण गाके।।41।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसत्यमित्रगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धी से साधु, गगन गमन कर सकते।
धरें गगनगामित्व, 'निर्मल' मुनि तपबल से।।
इनके गुरु वृषभेश, उनको नित्य जजूं मैं।
रोग, शोक, संक्लेश, सब दुख दूर करुं मैं।।42।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीनिर्मलगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में चलते जंतु–घात वहां नहिं होवे।
जलचारण यह ऋद्धि, तपश्चरण से होवे।।
'श्रीविनीत' गणधार, नमूं नमूं चित लाके।
ऋषभदेव को माथ, नाऊं अर्घ्य चढ़ाके।।43।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीविनीतगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ अंगुल भू उपरि, चलते अधर गगन में।
जंघाचारण ऋद्धि, धरते समवसरण में।।

'संवर' गणधर देव, उनके गुरु आदीश्वर।
जजत करूं दुखछेव, पाऊं सुख क्षेमंकर।।44।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसंवरगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पत्ते अरु फूल, उन पर चरण धरें भी।
चारणकिरिया ऋद्धि, जीवघात नहिं हो भी।।
'मुनीगुप्त' गणनाथ, वंदूं व्याधि नशाऊं।
नमूं नमाकर माथ, ऋषभदेव गुण गाऊं।।45।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमुनिगुप्तगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि शिखा पर चलें, बाधा रंच न होवे।
धूयें पर भी चले, पग स्खलित न होवें।।
'मुनीदत्त' गणनाथ, अग्निधूम चारण युत।
आदीश्वर के शिष्य, नमूं नमूं मैं शिरनत।।46।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमुनिदत्तगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्कायिक बध टाल, मेघों पर चल सकते।
जलधारा पर चलें, चारणऋषि बन करके।।
'मुनीयज्ञ' गणदेव, ऋषभदेव को नमते।
हम पूजें कर सेव, नाम मंत्र जप जपके।।47।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमुनियज्ञगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मकड़ी के तंतु, पर हल्के पग धरते।
बाधा करें न रंच, चारण ऋद्धी धरते।।
'मुनीदेव' गणनाथ, नमूं नमूं नित शिरनत।
जजूं तीर्थकर शिष्य, पाऊं जिनगुणसंपत्।।48।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमुनिदेवगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

जो सूर्य चन्द्र ग्रह नखत तारका, किरणों का अवलंबन लें।
बहुतेक योजनों गमन करें, ज्योतिश्चारण क्रिय ऋद्धी लें।।

गुरु 'गुप्तियज्ञ' गणधर बनकर, संपूर्ण ऋद्धि के स्वामी थे।
श्री आदिनाथ के चरण नमें, जो त्रिभुवन अंतर्यामी थे।।49।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीगुप्तियज्ञगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धी से मुनि वायु पंक्ति, के आश्रय से नभ में चलते।
स्खलन रहित पग धर धरके, बहुते कोशों तक चल सकते।।
यह वायुचारणा क्रिया ऋद्धि, 'श्रीमित्रयज्ञ' गणधर धरते।
उनके गुरु ऋषभदेव को भी, पूजत ही रोग शोक नशते।।50।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमित्रयज्ञगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप ऋद्धी के हैं सात भेद, उनमें हि उग्र तप पहला है।
एकेक उपवास अधिक जीवन, भर बढ़ता रहता है।।
गणदेव 'स्वयंभू' ने बहुविध, ऋद्धी से आत्मविकास किया।
श्रीऋषभदेव को ध्या ध्याकर, निज केवलज्ञान प्रकाश लिया।।51।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीस्वयंभूगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला आदिक उपवास करें, जब ऋद्धि दीप्ततप हो जाती।
आहार न हो बल तेज बढ़े, नहिं होती उन्हें भूख व्याधी।।
यह इस ऋद्धी का ही प्रभाव, तनु में बल मांस रुधिर वृद्धी।
'भगदेव' गणीश्वर वृषभेश्वर , के पूजत मिलती सब सिद्धी।।52।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीभगदेवगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धी से आहार ग्रहें, वह तपे लोह पर जल सदृश।
नीहार न हो मल मूत्र शुक्र, आदिक धातु नहिं बने विविध।।
बस शक्ति बढ़े तप बढ़े सदा ''भगदत्त'' गणीश्वर को प्रणमूं।
श्रीऋषभदेव को नित्य जजूं, भव भव के कर्म कलंक वमूं।।53।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीभगदत्तगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अणिमादिक चारण आदिक, नाना ऋद्धी से युक्त रहें।
मंदरपंक्ती सिंहनिष्क्रीड़ित, आदिक उत्तम उपवास गहें।।
वो चार ज्ञानधारी ऋषिवर, ही महातपो ऋद्धी धारें।
'भगफल्गू' गणधर के गुरुवर, श्रीऋषभदेव भव से तारें।।54।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीभगफल्गुगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशन आदिक बारह विध के, तप उग्र उग्र जो करते हैं।
ज्वर आदिक से पीड़ित हो भी, आतापनादि तप धरते हैं।।
'श्रीगुप्तफल्गु' तप ऋद्धिसहित, गणधर गुरु विघ्न विनायक हैं।।
उनके गुरु ऋषभदेव जिनवर, पूजत सुख संपति दायक हैं।।55।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीगुप्तफल्गुगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि घोर पराक्रम ऋद्धी से, अतिशायी शक्ती पाते हैं।
त्रिभुवन संहार करण जलधी, शोषण में समरथ होते हैं।।
यद्यपि ये कार्य नहीं करते, जगबन्धू 'मित्रफल्गू' गणधर।
उनके गुरु ऋषभदेव जिनवर, मैं पूजूं भवभय पातकहर।।56।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमित्रफल्गुगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अघोर यानी पूर्णशांत, महव्रत समिती गुप्ती पालें।
वे व्रतमय ब्रह्मा में चरते, अघोर ब्रह्मचर्या पालें।।
इन ऋद्धिसहित 'श्रीप्रजापति' गणधर की भक्ती करने से।
वध रोग कलह दुर्भिक्ष वैर, नशते भगवन् की भक्ती से।।57।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीप्रजापतिगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब द्वादशांग अंतर्मुहूर्त, में चिंतन करने में समरथ।
जो मनोबली ऋद्धी धारें, वे शुक्ल ध्यान में हों समरथ।।
'श्रीसर्वसंग' गणधर गुरुवर, इन ऋद्धि सहित भवि सुखदाता।
उनके गुरु श्री ऋषभदेव जिनवर, को पूजत मिले सर्व साता।।58।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीसर्वसंगगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत द्वादशांग उच्चारण कर, पढ़ते नहिं कंठ थके उनका।
यह वचनबली ऋद्धी प्रगटे, वे मेटें जग की सर्व व्यथा।।
'श्रीवरुण' गणी को नित प्रणमूं, उनके गुरु ऋषभदेव वंदूं।
श्रुतज्ञान पूर्ण करने हेतू, गणधर जिनवर को नित्य जजूं।।59।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवरुणगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन को भी अंगुलि ऊपर, जो उठा सकें वो कायबली।
नाना विध आसन कायक्लेश, करने से हो यह ऋद्धि भली।।

'धनपालक' गणधर को प्रणमूं, सब ऋद्धि सिद्धि सुख के दाता।
उनके गुरु ऋषभदेव को नित, मैं पूजूं मिले सौख्य साता।।60।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीधनपालकगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पद्धड़ी छंद–

औषधि ऋद्धी के आठ भेद, आमर्शौषधि यह ऋद्धि एक।
'मघवान' गणी यह ऋद्धि धरें, इन गुरु को वंदत पाप हरें।।61।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमघवानगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्ष्वेलौषधि ऋद्धी धरते, वे सर्वरोग संकट हरते।
गुरु 'तेजोराशी' गणधर थे, उन गुरु ऋषभेश्वर को जजते।।62।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीतेजोराशिगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु जल्लौषधि ऋद्धी धरंत, 'महावीर' नाम गणधर महंत।
उनके गुरु पूजूँ आदिनाथ, भवदधि डूबत को देयं हाथ।।63।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमहावीरगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मल्लौषधी धरते महान्, गणईश 'महारथ' भाग्यवान्।
श्रीऋषभदेव के शिष्य मान्य, पूजत ही पावें स्वात्म साम्य।।64।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमहारथगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि विप्रुष औषधि ऋद्धि धार, सब के दुख दारिद करें छार।
उनके गुरु ऋषभेश्वर महान्, जो 'विशालाक्ष' गणधर प्रधान।।65।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीविशालाक्षगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसे स्पर्शित नीर वायु, सब रोग हरे करते चिरायु।
सर्वौषधि धरते 'महाबाल', उनके गुरु पूजूं जगत्पाल।।66।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमहाबालगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे कटु या विषय व्याप्त अन्न, बस वचन मात्र से निर्विषान्न।
मुखनिर्विष युत 'शुचिसाल' साधु, उनके गुरु को पूजूं अबाध।।67।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीशुचिसालगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रोग विषादि समेत जीव, अवलोकन से हों स्वस्थ जीव।
दृष्टीनिर्विषयुत 'श्रीवज्र' साधु, उन गुरु को जजते स्वात्मस्वाद।।68।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवज्रगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीविष ऋद्धी जो धरंत, दुरआशिष से मरते तुरंत।
श्री 'वज्रसार' न करें प्रयोग, उन गुरु के नमते मिटे शोक।।69।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवज्रसारगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टीविषयुत गणि 'चन्द्रचूल' करुणासागर जग के नुकूल।
उनके गुरु ऋषभेश्वर जिनिंद, मैं जजूं बनूं अतिशय अनिंद्य।।70।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीचंद्रचूलगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर में आया रूखा अहार, पयवत् परिणमता स्वाद धार।
श्री 'जयकुमार' गणधर नमंत, उन गुरु को पूजत सुख अनंत।।71।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीजयकुमारगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर में आया रुक्षादि अन्न, तप से बन जाता मधुर अन्न।
'महारस' गणधर के गुरु जिनेश, मैं पूजूं पाऊं सुख हमेश।।72।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमहारसगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद–

अमृतास्रावि विष वस्तु अमृत करें।
उन वचन दुःखहर कर्ण अमृत भरें।।
'कच्छ' गणधर उन्हीं के नमूं पाद को।
शिष्य जिनके उन्हें भी जजूं भाव सों।।73।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीकच्छगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हस्ततल में रखा रुक्ष अन्नादि भी।
दिव्य वच भी अमृतसम करें तृष्टि ही।।
जो 'महाकच्छ' गणधर उन्हों के प्रभू।
मैं जजूं भक्ति से पाऊं आनंद भू।।74।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमहाकच्छगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नमि' महासाधु गणधर बने नाथ के।
ऋद्धि अक्षीण भोजन मिली त्याग से।।
चक्रवर्ती कटक जीम लेवे भले।
ना घटे पाद अर्चूं सदा अर्घ्य ले।।75।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीनमिगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू चतुष्कोण हो चार ही धनुष भी।
देव नर भी असंख्ये वहां तिष्ठहीं।।
नाम अक्षीण आलय महाऋद्धि से।
नाथ के शिष्य 'विनमी' जजूं भक्ति से।।76।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीविनमिगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीताछंद–

'श्रीबल' गणी ऋषभेश के, सब ऋद्धियों के नाथ हैं।
संपूर्ण गुण रत्नों भरें, फिर भी न कुछ उन पास है।।
जिनदेव के चरणाब्ज षट्पद, आत्मसुख में मग्न हैं।
उनको उन्हों के नाथ को, पूजत मिले सुख कंद है।।77।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीबलगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अतिबल' गणी ऋषभेश जिन के, समवसृति में शोभते।
अठरह सहस शीलों, गुणों से, आत्मसुख को पोषते।।
प्रभु भक्ति में लवलीन हो, निज आत्म का चिंतन करें।
गणधर गणों से वंद्य जिनवर, जजत भव भंजन करें।।78।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीअतिबलगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीभद्रबल' चउज्ञानधारी, ऋद्धियों से पूर्ण हैं।
उत्तर गुणों से राजते, यमदुःख करते चूर्ण हैं।।
ऋषभेष के पदपंकजों की, नित्य करते वंदना।
गणधर गुरु को आदिप्रभु को, पूजते दुख रंच ना।।79।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीभद्रबलगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नंदी' गणाधिप नाथ की, दिव्यध्वनि सुन मोदते।
द्वादश गणों को द्वादशांगी, में सतत संबोधते।।

निज शुद्ध परमानंदमय, ज्ञानाब्धि में अवगाहते।
फिर भी जिनेश्वर चरण वंदे, हम उन्हें शिर नावते।।80।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीनंदिगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर 'महाभागी' जिनेश्वर, पादपंकज ध्यावते।
बहु पुण्य संपादन करें, फिर पाप पुण्य नशावते।।
निज में सुपरमाल्हाद अमृत, पान कर शिव पावते।
उनके गुरु वृषभेष को, हम पूजते अति चाव से।।81।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमहाभागिगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीनंदिमित्र' गणेश नित, आदीश का वंदन करें।
चौरासी लक्षोत्तर गुणों से, पूर्ण भव खंडन करें।।
संपूर्ण ऋद्धि समेत फिर भी, नग्नमुद्रा धारते।
उनको जजूं जिन को नमूं, फिर तिरूं भक्तीभाव से।।82।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीनंदिमित्रगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीकामदेव' गणीश नित, तीर्थेश की भक्ती करें।
निज भक्त को तारें भवोदधि, से स्वयं गुण से तिरें।।
उनके चरण को वंद कर, वृषभेश की पूजन करुं।
निज साम्य अमृत को पिऊं, यमपाश का छेदन करुं।।83।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीकामदेवगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनुपम' गणीश्वर सर्व उपमा–रहित अनुपम गुण धरें।
संपूर्ण लोक अलोक में निज, कीर्ति बल्ली विस्तरें।।
सब ऋद्धि सिद्धि समेत फिर भी, आदिजिन के भक्त थे।
हम भी जजें गणधरगुरु, जिनराज को अति भक्ति से।।84।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीअनुपमगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य–गीता छंद–

श्री ऋषभदेव जिनेन्द्र के, चौरासि गणधर मान्य हैं।
गुरु 'ऋषभसेन' प्रधान इनमें, सर्व रिद्धि निधान हैं।।

द्वादश गणों के नाथ द्वादश, अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरस्य ऋषभसेनप्रमुखचतुरशीतिगणधरचरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शान्तिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः

द्वितीय वलय में 22 अर्घ्य

–दोहा–

तीर्थंकर बाईस के, गणधरदेव महान्।
पुष्पांजलि से पूजते, बने भव्य गुणवान्।।1।।

अथ द्वितीयवलये मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(22 तीर्थंकर के गणधर देवों के अर्घ्य)

–गीता छंद–

श्री अजितनाथ जिनेन्द्र के, नब्बे गणाधिप मान्य हैं।
'केशरीसेन' प्रधान इनमें, सर्व ऋद्धि निधान हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश, अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य केशरिसेनप्रमुखनवतिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिनेश्वर के सु इक सौ, पाँच गणधर ख्यात हैं।
गुरु 'चारुदत्त' प्रधान इनमें, सर्व ऋद्धि सनाथ हैं।।द्वादश.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य चारुदत्तप्रमुखपंचाधिकशतगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अभीनंदन के गणाधिप, एक सौ त्रय ख्यात हैं।
गुरु 'वज्रचमर' प्रधान इसमें, सर्व ऋद्धि सनाथ हैं।।द्वादश.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य वज्रचमरप्रमुखत्रयाधिकशतगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमति जिनके एक सौ, सोलह गणाधिप मान्य हैं।
'श्रीवज्र' गणधर मुख्य इनमें, सर्वऋद्धी खान हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकरस्य वज्रप्रमुखषोडशोत्तरएकशतगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीपद्मप्रभ के एक सौ, ग्यारह गणाधिप ख्यात हैं।
'श्रीचमर' गणधर मुख्य उनमें, सर्वरिद्धि सनाथ हैं।।द्वादश.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकरस्य चमरप्रमुखएकादशोत्तरएकशतगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर सुपारस के गणीश्वर, ख्यात पंचानवे हैं।
'बलदत्त' गणधर हैं प्रमुख, सब ऋद्धियों से भरे हैं।।द्वादश.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथतीर्थंकरस्य बलदत्तप्रमुखपंचनवतिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ के गणपती, तेरानवे गणपूज्य हैं।
'वैदर्भ' गणधर प्रमुख उनमें, सर्व ऋद्धी सूर्य हैं।।द्वादश.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभतीर्थंकरस्य वैदर्भप्रमुखत्रिनवतिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदंत जिनेश के गणधर अठासी मान्य हैं।
'श्रीनाग' मुनि गणधर प्रमुख सब ऋद्धियों की खान हैं।।द्वादश.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंततीर्थंकरस्य नागमुनिप्रमुखअष्टाशीतिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिनेश्वर के सत्यासी, गणधरा जग वंद्य हैं।
'श्री कुंथु' गणधर प्रमुख इनमें, सर्वरिद्धी कंद हैं।।द्वादश.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलतीर्थंकरस्य कुंथुप्रमुखसप्ताशीतिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांस जिनके पास सत्तत्तर गणाधिप श्रेष्ठ हैं।
'श्रीधर्मगुरु' गणधर प्रमुख, सब ऋद्धि गुण में ज्येष्ठ हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश, अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसतीर्थंकरस्य धर्मप्रमुखसप्ततिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र के, छ्यासठ गणाधिप गण धरें।
'मंदर' मुनी गणधर प्रमुख ये सर्व रिद्धि गुण भरें।।द्वादश.।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकरस्य मंदरप्रमुखषट्षष्टिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद–

विमलनाथ के गणधर पचपन, सब ऋद्धि से पावन।
'जयमुनि' प्रमुख उन्हों में गणधर, भव सागर से तारन।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकरस्य जयमुनिप्रमुखपंचपंचाशत्गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनंत जिनवर के गणधर, हैं पचास गुण आकर।
'श्री अरिष्ट' गणधर प्रमुख्य हैं, ऋद्धि सिद्धि रत्नाकर।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथतीर्थंकरस्य अरिष्टप्रमुखपंचाशत्गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ के गणधर सब ऋद्धी से पूर्ण तितालिस।
'श्री अरिष्टसेन' उनमें गुरु, ज्ञानज्योति से भासित।।ये.।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरस्य अरिष्टसेनप्रमुखत्रिचत्वारिंशत्गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के छत्तिस गणधर, चौंसठ ऋद्धि समन्वित।
'चक्रायुध' गणधर उनमें गुरु, सर्व गुणों से मंडित।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथतीर्थंकरस्य चक्रायुधप्रमुखषट्त्रिंशत्गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुनाथ के पैंतिस गणधर, शिवपथ विघ्न विनाशें।
प्रमुख 'स्वयंभू' गणधर उनमें, भविमन कुमुद विकासें।।ये.।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकरस्य स्वयंभूप्रमुखपंचत्रिंशद्गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर जिनवर के तीस गणाधिप, सर्वऋद्धि के धारी।
'कुंभ' प्रमुख हैं गणधर सबमें, परमानंद सुखकारी।।ये.।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथतीर्थंकरस्य कुंभप्रमुखत्रिंशद्गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ के अट्ठाइस गण, नामक गुणमणि धारें।
'श्री विशाख' गणधर गुरु उनमें, भक्त विघन परिहारें।।ये.।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथतीर्थंकरस्य विशाखप्रमुखअष्टाविंशतिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के अठरह गणधर, व्रत गुण शील समन्वित।
'मल्लि' प्रमुख हैं गणधर उनमें, सब श्रुत ज्ञान समन्वित।।ये.।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रततीर्थंकरस्य मल्लिप्रमुखअष्टादशगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि जिनवर के सत्रह गणधर, यम नियमों के सागर।
'सुप्रभ' प्रमुख गणाधिप उनमें, करते ज्ञान उजागर।।ये.।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकरस्य सुप्रभप्रमुखसप्तदशगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ के ग्यारह गणधर, ऋद्धि सिद्धि गुण धारें।
'श्री वरदत्त' प्रमुख गणधर हैं, गुणमणि माला धारें।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथतीर्थंकरस्य वरदत्तप्रमुखएकादशगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ के दश गणधर गुरु, चौंसठ ऋद्धि धरें हैं।
'प्रमुख स्वयंभू' गणधर उनमें, स्वात्मपियूष भरे हैं।।ये.।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरस्य स्वयंभूप्रमुखदशगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

बाइस तीर्थंकर प्रभो, उनके गधधर देव।
पूर्ण अर्घ्य से पूजहूँ, करूँ चरण की सेव।।1।।

ॐ ह्रीं अजितनाथादि–पार्श्वनाथपर्यंततीर्थंकरगणधरदेवेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शान्तिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः

तृतीय वलय में

(श्री महावीर स्वामी के 11 गणधर देवों के 11 अर्घ्य)

–दोहा–

महावीर जिनराज के, ग्यारह गणधर मान्य।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले स्वात्मसुखसाम्य।।1।।

अथ तृतीयवलये मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–दोहा–

'इन्द्रभूति' गणधर प्रथम, गौतम नाम प्रसिद्ध।
जिनकी कृपा प्रसाद से, मोक्षमार्ग है सिद्ध।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः इन्द्रभूतिनामगौतमगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वायुभूति' गणधर दुतिय, सर्वऋद्धिपरिपूर्ण।
जो जन पूजें भक्ति से, करें मोह अरि चूर्ण।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः वायुभूतिगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अग्निभूति' गणधर तृतिय, नमूं सर्वसुख कंद।
ध्यान अग्नि से कर्म दह, बने सिद्ध भगवंत।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः अग्निभूतिगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणी 'सुधर्माचार्य' गुरु, महावीर के नंद।
पूजूं अर्घ्य चढ़ाय के, पाऊं परमानंद।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः सुधर्माचार्यगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री मौर्य' गणधर गुरु, भविजन के शिर ताज।
पूजूं अर्घ्य चढ़ाय के, मिले सौख्य साम्राज्य।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः मौर्यगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणी 'मौन्द्रय' गुरु के चरण, जजूं सर्व सुखकार।
पाऊं निज सुखसंपदा, मिले भवोदधि पार।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः मौन्द्रयगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर 'पुत्र' सुनाम है, सन्मति प्रभु के नंद।
जजूं अर्घ्य ले भक्ति से, पाऊं सौख्य अनिंद्य।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः पुत्रनामगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीमैत्रेय' गणीन्द्र को, नमूं नमूं शत बार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, भरे सौख्य भंडार।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः श्रीमैत्रेयगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणी 'अकंपन' को नमूं, सर्व ऋद्धि के ईश।
ऋद्धि सिद्धि को पाय के, बसूं भुवन के शीश।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः श्रीअंकपनगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंधवेल' गणधर गुरू, मोहध्वांत से दूर।
जजूं चरण अरविंद मैं, पाऊं सुख भरपूर।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः अंधवेलगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु 'प्रभास' गणधर चरण, पूजत हो आनंद।
पाऊं ज्ञान प्रकाश मैं, हरूं जगत के द्वंद्व।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः प्रभासगणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–नरेन्द्र छंद–

महावीर प्रभू के गणधर हैं, ग्यारह[1] सब गुण पूरे।
इन्द्रभूति गौतम आदिक ये, यम की समरथ चूरें।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः इन्द्रभूतिप्रमुखएकादशगणधरदेवेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

चौबिस जिनके सब गणधर गुरु, चौंसठ ऋद्धी को धारे हैं।
ये चौदह सौ उनसठ[2] मानें, भक्तों को भव से तारे हैं।।
सर्वौषधि आदिक ऋद्धी से, सब रोग शोक दुःख हरण करें।
हम इनको पूजें भक्ती से, ये मुझमें समरस सुधा भरें।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरऋषभसेनादिएकोनषष्ट्यधिकचतुर्दशशतगणधर-चरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

चतुर्थवलय में
जंबूद्वीप ऐरावतक्षेत्र के गणधर देवों का अर्घ्य

–दोहा–

जंबूद्वीप में उत्तरे, क्षेत्रैरावत श्रेष्ठ।
पुष्पांजलि से पूजहूँ, गणधरगुरु जगज्येष्ठ।।1।।

अथ मंडलस्योपरि चतुर्थवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

---

1. ये 11 गणधर के नाम उत्तरपुराण के आधार से हैं।
2. तिलोयपण्णत्ति में 1459 गणधर संख्या है। उत्तरपुराण में 1452 संख्या है।

–शंभुछंद–

जंबूद्वीप के उत्तर में, ऐरावत क्षेत्र कहाता है।
वहाँ चतुर्थकाल में चौबिस, तीर्थंकर प्रभु तीर्थ विधाता हैं।।
उनके गणधर जितने भी हैं, उन सबको मेरा वंदन है।
प्रभु समवसरण में दिव्यध्वनि, गूंथे जो द्वादशांग श्रुत हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–ऐरावतक्षेत्रचतुर्थकालस्थ–वर्तमानकालीन–श्रीबालचंद्रनाथ-सुव्रतनाथ–अग्निसेननाथ–नंदिसेननाथ–श्रीदत्तनाथ–व्रतधरनाथ–सोमचंद्रनाथ–धृतदीर्घनाथ–शतायुष्यनाथ–विवसितनाथ–श्रेयोनाथ–विश्रुतजलनाथ–सिंहसेननाथ–उपशांतनाथ–गुप्तशासननाथ–अनंतवीर्यनाथ–पार्श्वनाथ–अभिधाननाथ–मरुदेवनाथ–श्रीधरनाथ–शामकंठनाथ–अग्निप्रभनाथ–अग्निदत्तनाथ–वीरसेननाथपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थित–सर्वगणधर-देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

वर ऐरावत क्षेत्र के, तीर्थंकर के शिष्य।
गणधर गुरुओं को जजूँ, पाऊं निजसुख नित्य।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–ऐरावतक्षेत्रस्थवर्तमानचतुर्थकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वगणधरदेवेभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचम वलय में
जंबूद्वीप के बत्तीस विदेहक्षेत्र के गणधर देवों के अर्घ्य
(32 अर्घ्य)

–दोहा–

बत्तीस देश विदेह में, तीर्थंकर के शिष्य।
पुष्पांजलि से मैं जजूं, गणधर गुरुवर नित्य।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पंचमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

कच्छा विदेह के आर्यखंड में क्षेमा नगरी रजधानी।
इस शाश्वत कर्मभूमि में नित, तीर्थंकर होते शिवगामी।।
सब गणधर सात ऋद्धिधारी, मनपर्यय ज्ञानी होते हैं।
उनको पूजूँ मैं अर्घ चढ़ा, वे भव भव का मल धोते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं कच्छादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे क्षेमानगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है देश सुकच्छा आर्यखंड, मधि क्षेमपुरी नगरी जानो।
उसमें नित होते तीर्थंकर, वहाँ शाश्वत कर्मभूमि मानो।।
वहां गणधर की सुन दिव्यध्वनि, मुनिगण भी प्रमुदित होते हैं।
हम इनको अर्घ चढ़ाते ही, तन मन से पुलकित होते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सुकच्छादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे क्षेमपुरीनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है देश महाकच्छा विदेह, उस आर्यखंड के ठीक बीच।
सब तीर्थंकर के गणनायक, मनपर्यय ज्ञानी मुनिगणीश।।
ये विघ्न निवारक मंगलकर, सब दुख दारिद को हरते हैं।
इनकी पूजा भक्ति करके, हम सर्व व्याधि को हरते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं महाकच्छादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे अरिष्टानगर्यां सर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के गणधर अगणित, कच्छावति अरिष्टपुरि में हैं।
जिन बिन दिव्यध्वनि नहीं खिर, जो अतिशय गुण से पूरण हैं।।
उन चार ज्ञानधर गणनायक, गणधर परमेष्ठी को वंदूँ।
नित अर्घ चढ़ा करके प्रणमूँ, सब आधि व्याधि दुख को खंडूँ।।4।।

ॐ ह्रीं कच्छावतीदेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे अरिष्टापुरीनगर्यां सर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवर्ता देश विदेह कहा, उसमें आरजखंड शाश्वत है।
उनके मधि है खड्गानगरी, में तीर्थंकर धर्मतीर्थपति हैं।।

द्वादशगण के नायक गणधर, सब समवसरण में रहते हैं।
सब ऋद्धि सिद्धि नव निधि देकर, भक्तों के सब दुख हरते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं आवर्तादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे खड्गानगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभदेश लांगतावर्ता में, मंजूषानगरी अति प्यारी।
वहां तीर्थंकर के समवसरण उनकी पूजा भव दुखहारी।।
उनके गणधर गुरु को पूजें, वे भव्यों के रक्षक माने।
उनकी पूजा से सब सुख हो, सब मंगल हो यह सरधाने।।6।।

ॐ ह्रीं लांगलावर्तादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे मंजूषानगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कला देश सप्तम विदेह, उसमें औषधि नगरी मानी।
तीर्थंकर के बारहगण के, गणधर होते चारों ज्ञानी।।
हम सब गणधर गुरु को पूजें, वे हमको निज सम्पत्ति देवें।
सब रोग शोक दुख दारिद को, वे इक क्षण में ही हर लेवें।।7।।

ॐ ह्रीं पुष्कलादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे औषधीनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कलावती अष्टमविदेह, इसमें छः खण्ड कहे जाते।
है आर्य खण्ड में पुंडरीकणी, नगरी उसमें सुर आते।।
तीर्थंकर के अगणित गणधर, सब ऋद्धी के स्वामी होते।
मैं पूजूँ विघ्न विनाशक ये, जग के अंतर्यामी होते।।8।।

ॐ ह्रीं पुष्कलावतीदेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे पुण्डरीकणीनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-रोला छंद-

वत्सादेशविदेह, आर्य खण्ड है उसमें।
पुरी सुसीमा एक, रजधानी है उसमें।।
श्री गणधर गुरुदेव, रहते समवसरण में।
अर्घ्य चढ़ाऊँ नित्य, विघ्न विनाशक जग में।।9।।

ॐ ह्रीं वत्सादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे सुसीमानगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुवत्सा रम्य, आर्यखण्ड उसमें हैं।
पुरी कुण्डला एक, तीर्थंकर उसमें हैं।।
तीर्थंकर के पास, गणधर देव विराजें।
करूं अर्चना नित्य, भविजन कमल विकासें।।10।।

ॐ ह्रीं सुवत्सादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे कुण्डलानगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावत्सा सुविदेह अपराजिता पुरी में।
तीर्थंकर प्रभु नित्य, गणधर उन चरणन में।।
उन गणधर को नित्य, सुरनर गण मिल पूजें।
मैं भी पूजूँ नित्य, जन्म मरण दुख छूटें।।11।।

ॐ ह्रीं महावत्सादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे अपराजितानगर्यां सर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वत्सावतीविदेह उसके आरजखंड में।
तीर्थंकर नित होय नगरी प्रभंकरा में।।
बारहगण के नाथ, गणधर देव कहाते।
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज, समवसरण में राजे।।12।।

ॐ ह्रीं वत्सावतीदेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे प्रभंकरानगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्यादेश विदेह, आर्यखण्ड है उसमें।
अंका नगरी नित्य, तीर्थंकर हो उसमें।।
तीर्थंकर के शिष्य, गणधर देव प्रमुख हैं।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, वे जग मंगलप्रद हैं।।13।।

ॐ ह्रीं रम्यादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे अंकानगर्याम् सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुरम्या रम्य, आर्यखंड उसमें है।
तीर्थंकर से युक्त, पद्मावति नगरी है।।

तीर्थनाथ के शिष्य, गणधर देव कहे हैं।
उनको पूजूं नित्य, वे सुखकर गुरुवर हैं।।14।।

ॐ ह्रीं सुरम्यादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे पद्मावतीनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया शुभदेश, नगरी शुभा वहाँ पर।
तीर्थंकर परमेश, होते रहते सुखकर।।
गुणधर गणधर देव, सर्वगुणों के दाता।
ऋद्धि सिद्धि से पूर्ण, पूजूं सौख्य विधाता।।15।।

ॐ ह्रीं रमणीयादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे शुभानगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश मंगलावति में, आर्यखंड मधि नगरी।
रत्नसंचया नाम, तीर्थंकर गुण लहरी।।
गणनायक गुरुदेव, विघ्न विनाशक ख्याता।
पूजूं भक्ति समेत, नवनिधि सिद्धि विधाता।।16।।

ॐ ह्रीं मंगलावतीदेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे रत्नसंचयानगर्यां सर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

पद्मादेश विदेह में, अश्वपुरी में नित्य।
गणधर सब तीर्थेश के, करें अर्चना नित्य।।17।।

ॐ ह्रीं पद्मादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे अश्वपुरीनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुपद्मा सिंहपुरि, गणधर गुरु राजंत।
उन सब की पूजा करूँ, हो सब दुख का अंत।।18।।

ॐ ह्रीं सुपद्मादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे सिंहपुरीनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापद्मा में महापुरी, गणधर गुरु जगत्राण।
जजूँ अर्घ्य ले भक्ति से, शत शत करूँ प्रणाम।।19।।

ॐ ह्रीं महापद्मादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे महापुरीनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश पद्मकावति विषे, विजयपुरी विख्यात।
गणधर गुरु को मैं जजूँ, विघ्न विनाशक ख्यात।।20।।

ॐ ह्रीं पद्मकावतीदेशविदेहमध्ये विजयपुरीनगर्यां सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संखादेश विदेह में, अरजा नगरी मान्य।
गुणधर गणधर चरण की, शरण लिया सुख साम्य।।21।।

ॐ ह्रीं शंखादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे अरजानगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नलिनी देह विदेह में, विरजानगरी मध्य।
गणधर देव महान हैं, जजत मिले सुख नव्य।।22।।

ॐ ह्रीं नलिनीदेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे विरजानगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमुदा देश विदेह में, पुरी अशोका मान्य।
गणधर मुनिगण अमित हैं, जजत मिले सुख साम्य।।23।।

ॐ ह्रीं कुमुदादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे अशोकानगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरिता देश विदेह में, वीतशोक पुरि दक्ष।
गणधर गुरु को नित नमूँ, मम आत्मा हो स्वच्छ।।24।।

ॐ ह्रीं सरितादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे वीतशोकनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-चौपाई-

वप्रादेश विदेह महान्, विजयापुरि आर्यखंड प्रधान।
तीर्थंकर के शिष्य प्रधान, गणधर देव जजूँ गुण खान।।25।।

ॐ ह्रीं वप्रादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे विजयापुरीनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुवप्रा कहा विदेह, वैजयंति पुरि सुखप्रद येह।
बारहगण नायक यति ईश, नमूं नमूं मैं अतिशय प्रीत।।26।।

ॐ ह्रीं सुवप्रादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे वैजयंतीनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महावप्रा के मध्य, पुरी जयंती सुखकर नित्य।
समवसरण में रहे गणींद्र, नमें उन्हें शत इन्द्र मुनीन्द्र।।27।।

ॐ ह्रीं महावप्रादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे जयंतीनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश वप्रकावती विदेह, अपराजिता पुरी सुखदेह।
गणधर देव चरण अमलान, पूजत देवें ऋद्धि निधान।।28।।

ॐ ह्रीं वप्रकावतीदेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे अपराजितानगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधादेश विदेह अनूप, चक्रपुरी नगरी सुखरूप।
गणधर गुरु को पूजूँ यहाँ, पापपुंज सब खंडें यहाँ।।29।।

ॐ ह्रीं गंधादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे चक्रपुरीनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशसुगंधानाम विदेह, खड्गपुरी नगरी सुख देह।
गणधर चरणों वंदन करूँ, निज के सब दुख खंडन करूँ।।30।।

ॐ ह्रीं सुगंधादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे खड्गपुरीनगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश गंधिला में कहा विदेह, पुरी अयोध्या सुखप्रद येह।
वहां गणधर गुरु अर्चंत, मिले आत्मगुण सौख्य अनंत।।31।।

ॐ ह्रीं गंधिलादेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे अयोध्यानगर्यां सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधमालिनी देश विदेह, पुरी अवध्या है सुखदेह।
गणधर देवों के चरणाब्ज, जजते खिले भव्य मन अब्ज।।32।।

ॐ ह्रीं गंधमालिनीदेशविदेहसंबंधिआर्यखंडे अवध्यानगर्यां सर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

बत्तीस देश विदेह के, गणधर देव महान्।
नमूँ नमूँ गणधर गुरु, बनूँ स्वात्म निधिमान।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि–त्रैकालिकतीर्थंकरदेवसमवसरणस्थितसर्वत्रैकालिक–गणधरचरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितसर्वगणधरदेवेभ्यो नमः।

जयमाला

–त्रिभंगी छंद–

जय जय श्री गणधर, धर्म धुरंधर, जिनवर दिव्यध्वनी धारें।
द्वादश अंगों में, अंग बाह्य में, गूँथे ग्रन्थ रचें सारे।।
गुरु नग्न दिगंबर, सर्व हितंकर, तीर्थंकर के शिष्य खरे।
मैं नमूँ भक्ति धर, ऋद्धि निधीश्वर, मुझ शिवपथ निर्विघ्न करें।।1।।

–स्रग्विणी छंद–

मैं नमूँ मैं नमूँ नाथ गणधार को।
शील संयम गुणों के सुभंडार को।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।2।।

ऋद्धियाँ सर्व तेरे पगों के तले।
सर्व ही सिद्धियाँ आप चरणों भले।।नाथ.।।3।।

हलाहल विष कभी पाणि में आवता।
शीघ्र अमृत बने ऋद्धि गुण गावता।।नाथ.।।4।।

दीप्ततप ऋद्धि से नित्य[1] उपवास है।
देह की कांति फिर भी द्युतीमन्त है।।नाथ.।।5।।

सर्व चौंसठ ऋद्धी धरें गुण भरें।
भक्तगण की सभी आश पूरी करें।।नाथ.।।6।।

विघ्न बाधा हरो सर्व सम्पत भरो।
स्वात्मपीयूष दे नाथ तृप्ती करो।।नाथ.।।7।।

---

1. दीप्ततप ऋद्धि से सदाकाल आहार बिना भी शरीर का तेज बढ़ता ही रहता है।
धवला पु. पृ. 127।

मोह का नाशकर क्रोध शत्रू हरो।
मृत्यु को मार दूँ ऐसी शक्ती भरो।।नाथ.।।8।।

चार ज्ञानी प्रभो! चार गति भय हरो।
दे चतुष्टय अनंती सदा सुख करो ।।नाथ.।।9।।

इन्द्रभूती महाज्ञान मद से भरे।
पास आते हि सम्यक्त्व निधि को धरें।।नाथ.।।10।।

शिष्य होके दिगम्बर मुनी बन गये।
चार ज्ञानी हुये गणपती बन गये।।नाथ.।।11।।

वीरकी ध्वनि छियासठ दिनों में खिरी।
इंद्र का हर्ष ना मावता उस घरी।।नाथ.।।12।।

श्रावणी प्रतिपदा दिन प्रथम वर्ष का।
वीर शासन दिवस आज भी शर्मदा।।नाथ.।।13।।

बारहों अंग पूर्वों कि रचना करी।
आज तक भी वही सार[1] में है भरी।।नाथ.।।14।।

गणधरों के बिना दिव्यध्वनि ना खिरे।
पद उन्हें जो प्रभू पास दीक्षा धरें।।नाथ.।।15।।

गणधरों का सुमाहात्म्य मुनि गावते।
कीर्ति गाके कोई पार ना पावते।।नाथ.।।16।।

धन्य मैं धन्य मैं धन्य मैं हो गया।
धन्य जीवन सफल आज मुझ हो गया।।नाथ.।।17।।

आप गणइंद्र की भक्ति शोकापहा[2]।
आप की भक्ति ही सर्वसौख्यावहा[3]।।नाथ.।।18।।

1. अंगपूर्व के अंश अंश के साररूप में आज जैन ग्रंथ हैं।2. शोकनाशिनी। 3.सुख देने वाली।

पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
'ज्ञानमती' पूर्ण हो सुख असाधारणा।।नाथ.।।19।।

–दोहा–

कर्मभूमि चौंतीस के, गणधर गुण आधार।
नमूँ नमूँ उनके चरण, मिले स्वात्मनिधिसार।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकरपरमदेवानां वृषभसेनादिसर्वगणधरदेवेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

तीर्थंकर प्रभु के समवसरण में, प्रभु दिव्यध्वनी को सुनते हैं।
बारह अंगों में ग्रथित करें, श्रुततीर्थ प्रवर्तन करते हैं।।
इन गणधर देवों को यजते, संपूर्ण विघ्न व्याधी टलती।
'सज्ज्ञानमती' केवल होती, संपूर्ण ऋद्धि सिद्धी मिलती।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. 3

ढाईद्वीप गणधरदेव पूजा

अथ स्थापना (शंभु छंद)

मध्यलोक में ढाईद्वीप तक, कर्मभूमियाँ मानी हैं।
सब इक सौ सत्तर भव्यहेतु, ये शिवपथ की रजधानी हैं।
इनमें तीर्थेश रहें उन के, गणधर को पूजूँ भक्ती से।
आह्वानन स्थापन करके, गुणमणि को ध्याऊँ युक्ती से।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अथ अष्टक (नरेन्द्र छंद)

सरयूनदि का शीतल जल ले, जिनपद धार करूँ मैं।
साम्यसुधारस शीतल पीकर, भव भव त्रास हरूँ मैं।।
त्रैकालिक गणधर गुरुवर को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर चंदन घिस, जिनपद में चर्चूं मैं।
मानस तनु आगंतुक त्रयविध, ताप हरो अर्चूं मैं।।
त्रैकालिक गणधर गुरुवर को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम उज्ज्वल अक्षत से, प्रभु नव पुंज चढ़ाऊँ।
निजगुणमणि को प्रगटित करके, फेर न भव में आऊँ।।
त्रैकालिक गणधर गुरुवर को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोगरा सेवंती, वासंती पुष्प चढ़ाऊँ।
कामदेव को भस्मसात् कर, आतम सौख्य बढ़ाऊँ।।
त्रैकालिक गणधर गुरुवर को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर फेनी लड्डू पेड़ा, रसगुल्ला भर थाली।
तुम्हें चढ़ाऊँ क्षुधा नाश हो, भरें मनोरथ खाली।।
त्रैकालिक गणधर गुरुवर को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णदीप में ज्योति जलाऊँ, करूँ आरती रुचि से।
मोह अंधेरा दूर भगे, सब ज्ञान भारती प्रगटे।।
त्रैकालिक गणधर गुरुवर को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी अग्निपात्र में, खेवत उठे सुगंधी।
कर्म जलें सब सौख्य प्रगट हों, फैले सुयश सुगंधी।।

त्रैकालिक गणधर गुरुवर को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आडू लीची सेब संतरा, आम अनार चढ़ाऊँ।
सरस मधुर फल पाने हेतू, शत-शत शीश झुकाऊँ।।
त्रैकालिक गणधर गुरुवर को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ्य बनाकर, सुवरण पुष्प मिलाऊँ।
भक्तिभाव से गीत नृत्य कर, प्रभु को अर्घ्य चढ़ाऊँ।।
त्रैकालिक गणधर गुरुवर को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

यमुना सरिता नीर, गुरु चरणों धारा करूँ।
मिले निजात्म समीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित खिले सरोज, गुरुचरणों अर्पण करूँ।
निर्मद करूँ मनोज, पाऊँ जिनगुण संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

छठे वलय में 170 कर्मभूमि के
श्रीगणधर देवों के 170 अर्घ्य

–दोहा–

तीर्थंकर की दिव्यध्वनि, श्रवण करें गणनाथ।
द्वादशांगकर्ता नमूँ, गणधर को नत माथ।।1।।

अथ मंडलस्योपरि षष्ठवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–भरतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–कच्छकावतीकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डेत्रैकालिकसर्व–गणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

–पूर्णार्घ्य–रोलाछंद–

जलगंधादिक लेय, वसुविध अर्घ्य बनाऊं।
अतुल अनघपद हेतु, पूजूं ध्यान लगाऊं।।
सब गणधरगुरु नित्य, श्रद्धा भक्ति जजूं मैं।
परमानंद स्वरूप, निजपद मुक्ति भजूं मैं।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमि–आर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

-दोहा-

पूर्वधातकीखंड में, कर्मभूमि चौंतीस।
पुष्पांजलि कर पूजहूं, गणधर गुरु नत शीश।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-भरतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक-सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

–पूर्णार्घ्य–गीताछंद–

जिनराज तीर्थंकर सदा ही, इंद्रगण से वंद्य हैं।
उन निकट में गणधर गुरु, वे भी जगत अभिनंद्य हैं।।
जलगंध आदिक अर्घ्य ले, इस हेतु मैं अर्चन करूँ।
अतिशीघ्र ही सब कर्म हनकर, मुक्ति लक्ष्मी वश करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधि–चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमि–आर्यखंडेषु त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

परमपुरुष गणधर गुरू, परमानंद निमग्न।
पुष्पांजलि से पूजहूँ, करूं मोह अरि भग्न।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–भरतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।83।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।

–पूर्णार्घ्य–अडिल्लछंद–

जल गंधादिक लेकर, अर्घ्य बनाय के।
पूजूं भक्ति समेत, हर्ष उर लाय के।।
गणधर गुरु को नित्य, जजूं मन लाय के।
समकित निधि ले हर्षूं, गुरुगुण गाय के।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधि–चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमि–आर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

पूरब पुष्करद्वीप में, कर्मभूमि चौंतीस।
पुष्पांजलि कर पूजहूं, गणधरगुरु नत शीश।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–भरतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधर–देवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।109।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।110।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्ड त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।111।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।112।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।113।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।114।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।115।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।116।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।117।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।118।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्ड त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।119।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।120।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डेत्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।121।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्ड त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।122।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्ड त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।123।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्ड त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।124।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्ड त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।125।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।126।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।127।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।128।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।129।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्ड त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।130।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।131।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।132।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।133।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्ड त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।134।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्ड त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।135।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।136।।

–पूर्णार्घ्य–नरेंद्रछंद–

तीर्थंकर प्रभु सुरगण वंदित, जन जन के हितकारी।
जो उनके गणधर को नमते, वे बनते गुणधारी।।
जल गंधादिक अर्घ्य चढ़ाकर, पूजूं हर्ष बढ़ाके।
चिन्तय चिंतामणि निजआतम, पाऊं पुण्य कमाके।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि–चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमि–आर्यखंडेषु त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

पश्चिम पुष्कर द्वीप में, तीर्थंकर जिनराज।
उनके गणधर को जजूं, पुष्पांजलि कर आज।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–भरतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।137।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।138।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।139।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।140।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।141।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।142।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।143।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।144।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।145।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।146।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।147।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।148।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।149।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे–त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।150।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।151।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।152।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।153।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।154।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।155।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।156।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।157।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।158।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।159।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।160।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।161।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।162।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।163।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।164।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महावप्राविदेहक्षेत्रायखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।165।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।166।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।167।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।168।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–सर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।169।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।170।।

–पूर्णार्घ्य–नाराचछंद–

तोय गंध शालिपुष्प, आदि अष्ट द्रव्य ले।
तीन रत्न हेतु तीर्थनाथ को जजूं भले।
तीर्थनाथ शिष्य की, गणधरों की वंदना।
धर्म्य शुक्ल ध्यान हेतु, मैं करूं महार्चना।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि–चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमि–आर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

इक सौ सत्तर कर्मभू, तीर्थंकर भगवान।
त्रैकालिक गणधर गुरू, जजत बनूं मतिमान।।6।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयसंबंधि–सप्तत्यधिकशतकर्मभूमि–आर्यखंडेषु त्रैकालिकानन्तानंतसर्वगणधरदेवेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्री श्रीसमवसरणस्थितसर्वगणधरदेवेभ्यो नमः।

जयमाला

–नरेन्द्र छंद –

जय जय श्री अरिहंत देव, तीर्थंकर प्रभु सुखकारी।
जय जय उनके गणधर गुरुवर, भव-भव दुःख परिहारी।।

जय जिनधर्म जिनेश्वर वाणी, समवसरण सुख आलय।
गणधर गुरु को नित्य नमूँ मैं, ये हैं सर्व सुखालय।।1।।

जंबूद्वीप का भरतक्षेत्र है, पण शत छब्बिस योजन।
छह खण्डों में आर्यखण्ड इक, यहाँ काल परिवर्तन।।
चौथे युग में अर्हंतादिक, तीर्थंकर रहते हैं।
पंचम युग में आचार्यादिक, साधु साध्वि रहते हैं।।2।।

ऐरावत में भरतक्षेत्र सम, सर्व व्यवस्था मानी।
बत्तिस क्षेत्र विदेहों में नित, वर्ते जिनवर वाणी।।
कच्छा देश विदेह दो सहस, दो सौ बारह योजन।
भरतक्षेत्र में चतुर्गुणाधिक, सब विदेह हैं उत्तम।।3।।

चौंतिस आर्यखण्ड में इक-इक, उपसागर हैं माने।
यहाँ भरत में उपसागर, उपनदियाँ बहुत बखाने।।
कर्मभूमि में मनुष धर्म कर, स्वर्ग-मुक्ति पद पाते।
रत्नत्रय से निज निधि पाकर, शाश्वत सुख पा जाते।।4।।

ऐसे ही धातकी खण्ड में, पुष्करार्ध में जानो।
सब मिल कर्मभूमियाँ इक सौ-सत्तर हैं सरधानो।।
शाश्वत कर्मभूमियाँ इक सौ-साठ विदेहों की हैं।
पाँच भरत पंचैरावत की, दश अशाश्वत की हैं।।5।।

शुभ से पुण्यास्रव पापास्रव, अशुभ भाव से होता।
इससे आठ कर्म बंध जाते, फल पाते दुःख होता।।
कोई ज्ञान प्रशंसा करते, उसमें ईर्ष्या होती।
जानबूझकर ज्ञान छिपावे, तब निन्हव का दोषी।।6।।

नहीं बताना ज्ञान अन्य को, यह मात्सर्य दुखारी।
ज्ञान-ध्यान में विघ्न डालना, अंतराय है भारी।।
अन्य प्रकाशित ज्ञान रोककर, आसादन कर लेना।
सत्य ज्ञान में दोष लगा, उपघात दोष कर लेना।।7।।

ज्ञान विषय में इन कार्यों से, ज्ञानावरण बंधे है।
दर्शनविषयक इन कार्यों से, दर्शनरज चिपके है।।
हे प्रभु! मुझ घर कर्मशत्रु ये, प्रतिक्षण आते रहते।
रुक जाते फिर समय पायकर, ज्ञान दरस हैं ढकते।।8।।

नाथ! इन्हीं से मैं अज्ञानी, पूर्ण ज्ञान नहिं प्रगटे।
गुरो! युक्ति ऐसी दे दीजे, 'ज्ञानमती' बन चमके।।
केवलज्ञान स्वभावी आत्मा, केवलदर्श स्वभावी।
नाथ! आपकी कृपा प्राप्तकर, बनूँ निजात्म स्वभावी।।9।।

–दोहा –

त्रैकालिक गणधर गुरू, कहे अनंतानंत।
तिन्हें अनंत नमोऽस्तु कर, पाऊं सौख्य अनंत।।10।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितआर्यखंडेषु त्रैकालिकसर्वगणधरदेवेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

तीर्थंकर प्रभु के समवसरण में, प्रभु दिव्यध्वनी को सुनते हैं।
बारह अंगों में ग्रथित करें, श्रुततीर्थ प्रवर्तन करते हैं।।
इन गणधर देवों को यजते, संपूर्ण विघ्न व्याधी टलतीं।
सज्ज्ञानमती केवल होती, संपूर्ण ऋद्धि सिद्धी मिलती।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–दोहा –

ऋषभदेव से वीर तक तीर्थंकर प्रभु ईश।
शांतिनाथ भगवान को, नमूँ-नमूँ नत शीश।।1।।

शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु, तीन-तीन पद नाथ।
इनके श्री चरणाब्ज को, नमूँ नमाकर माथ।।2।।

वर्तमान में वीर प्रभु, शासनपति भगवान।
इनके शासन में हुये, बहु आचार्य महान।।3।।

मूल-संघ में कुंदकुंद गुरु, अन्वय सरस्वति गच्छ।
बलात्कार गण में हुए , सूरि नमूँ मन स्वच्छ।।4।।

सदी बीसवीं के प्रथम, गुरु दिगंबराचार्य।
चरित चक्रवर्ती श्री, शांतिसागराचार्य।।5।।

इनके शिष्योत्तम श्री, वीरसागराचार्य।
पहले पट्टाचार्य गुरु, नमूँ भक्ति उर धार्य।।6।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, चालीस जगत्प्रसिद्ध।
मगसिर सुदि ग्यारस तिथी, हस्तिनागपुर तीर्थ।।7।।

मैंने गणिनी ज्ञानमती, किया संकलित विधान।
सर्व गणधर देव का, महिमावान विधान।।8।।

जब तक जम्बूद्वीप की, कीर्ति जगत् में व्याप्त।
तब तक ''ज्ञानमती'' कृती, रहे विश्व विख्यात।।9।।

(इति श्रीसर्वगणधरदेवविधानं संपूर्णं।)
वर्द्धतां जिनशासनं।

श्री गणधर स्वामी की मंगल आरती

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–तन डोले....................

गणधर स्वामी, अन्तर्यामी की मंगल दीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूं आरतिया।टेक.।।

तीन न्यून नव कोटि मुनीश्वर, ढाई द्वीप में होते।
घोर तपस्या के द्वारा, निज कर्म कालिमा धोते।।गुरू जी।।
गणधर भी हैं, श्रुतधर भी हैं, इन मुनियों में सरताज वे
मैं आज उतारूं आरतिया।।1।।

वृषभसेन से गौतम तक हैं, तीर्थंकर के गणधर।
सबने ही कैवल्य प्राप्त कर, पाया पद परमेश्वर।।गुरू जी.....
प्रभु दिव्यध्वनि, सुन करके मुनी, करते निज पर कल्याण हैं।
मैं आज उतारूं आरतिया।।2।।

गणधर के अतिरिक्त तपस्वी, मुनि भी ऋद्धी पाते।
उनको नमकर नर-नारी के, रोग, शोक नश जाते।।गुरू जी.।।
अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा ऋद्धी युत जो मुनिराज।
मैं आज उतारूं आरतिया।।3।।

इन गणधर गुरु के चरणों में, शत वंदन करना है।,
कहे ''चंदनामती'' मुझे भी, शिवपथ पर चलना है।।गुरू जी.।।
ज्ञानी ध्यानी, श्रुत विज्ञानी, गुरू की आरति सुखकार है।
मैं आज उतारूं आरतिया।।4।।

श्री गौतम गणधर चालीसा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

–दोहा–

वंदूँ वीर जिनेन्द्र को, मन वच तन कर शुद्ध।
उनके गणधर शिष्य को, नमूँ हृदय कर शुद्ध।।1।।
श्री गौतम गणधर हुए, गणनायक मुनिराज।
जिनकी वाणी सुन बने, अन्य बहुत मुनिराज।।2।।
उन गणधर भगवान का, चालीसा सुखकार।
है सम्यक् श्रुतज्ञान का, यह भी इक आधार।।3।।

–चौपाई–

जय हो वीतराग प्रभु वाणी, वीर दिव्यध्वनि जगकल्याणी।।1।।
बने नाथ जब केवलज्ञानी, समवसरण रचना के स्वामी।।2।।
दिव्यध्वनी जब खिरी नहीं थी, इन्द्र के मन तब युक्ति हुई थी।।3।।
सोचा प्रभु को शिष्य चाहिए, गणधर पद के योग्य चाहिए।।4।।
तभी दिव्यध्वनि खिर सकती है, सारी जनता सुन सकती है।।5।।
इन्द्र ने अवधिज्ञान से जाना, एक महाज्ञानी पहचाना।।6।।
सुनो उसी ज्ञानी की गाथा, जो कैसे सम्यक्त्व है पाता।।7।।
मगध देश में ब्राह्मण नगरी, रहते थे वहाँ इक दम्पत्ती।।8।।
था शाण्डिल्य नाम पण्डित का, स्थंडिला नाम पत्नी का।।9।।
गौतम गार्ग्य पुत्रद्वय जनमे, सर्वकला में पारंगत वे।।10।।
दूजी भार्या नाम केशरी, वह भार्गव सुत की जननी थी।।11।।
इस प्रकार त्रय पुत्र को पाकर, थे शाण्डिल्य प्रसन्न गुणाकर।।12।।
इनके तीन नाम थे दूजे, जिनसे तीनों ही प्रसिद्ध थे।।13।।
इन्द्रभूति गौतम को जानो, गार्ग्य को अग्निभूति तुम मानो।।14।।
भार्गव वायुभूति कहलाया, तीनों में था मान समाया।।15।।
पाँच शतक शिष्यों का स्वामी, इन्द्रभूति गौतम जगनामी।।16।।
उनके पास इन्द्र ने जाकर, पूछा एक प्रश्न का उत्तर।।17।।
वृद्ध वेषधारी का प्रश्न सुन, बोल पड़े आकस्मिक गौतम।।18।।
तू मुझको निज गुरू के पास में, ले चल वहीं पर करूँगा वाद मैं।।19।।
इन्द्र को तो यह इन्तजार था, प्रभु ढिग चलने को तैयार था।।20।।
चले इन्द्र के साथ में गौतम, अपने पाँच शतक शिष्यों संग।।21।।

राजगृही विपुलाचल ऊपर, राज रहा था समवसरण प्रभु।।22।।
वहाँ पहुँचते ही गौतम की, सारी मिथ्याभ्रांति हटी थी।।23।।
तत्क्षण सम्यग्दर्शन पाया, वीर प्रभू को शीश नमाया।।24।।
बन गये नग्न दिगम्बर मुनिवर, तत्क्षण बने प्रभू के गणधर।।25।।
हो गये चार ज्ञान के धारी, जय हे भगवन् स्तुती उचारी।।26।।
वीर की दिव्यध्वनि तत्क्षण ही, खिर गई गणधर के मिलते ही।।27।।
इन्द्रभूति गौतम गणधर ने, दिव्यध्वनि हृदयंगम करके।।28।।
द्वादशांग रच दिया शीघ्र ही, उसका ही है अंश आज भी।।29।।
श्रावण कृष्णा एकम तिथि थी, गणधर पद धारण की शुभ थी।।30।।
महावीर शासन का शुभ दिन, कृतयुग का माना है प्रथम दिन।।31।।
ग्रंथ आज उपलब्ध हैं जो भी, प्रभु वाणी के अंश हैं वो भी।।32।।
है साक्षात भी गौतम वाणी, सुनो भव्यजन जगकल्याणी।।33।।
कहें ''सुदं मे आउस्संतो'', तुम भी धारो आयुष्मन्तों।।34।।
दश अध्यायों में विभक्त है, ज्ञान प्राप्ति हेतू सशक्त है।।35।।
गणिनी ज्ञानमती माताजी, गणधरवाणी संग्रहकर्त्री।।36।।
उनने गणधर वर्ष चलाया, जिन आगम का सार बताया।।37।।
सभी भव्यजन पढ़ो पढ़ाओ, गणधर वाणी को अपनाओ।।38।।
गौतम गणधर पूजन कर लो, नाम मंत्र भी उनका जप लो।।39।।
जय जय बोलो प्रभु पद नम लो, सार्थक मानव जीवन कर लो।।40।।

–शंभु छंद–

यह गौतम गणधर चालीसा, चालिस दिन तक नितप्रति पढ़ना।
हे आयुष्मन्तों ! गणधर की, ऋद्धी का फल सार्थक वरना।।
जीवन में भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख की प्राप्ती करना।
फिर परम्परा से गणधर पद को, पाकर शाश्वत सुख भरना।।1।।
गणिनी माता श्री ज्ञानमती, जी की शिष्या चन्दनामती।
श्री गौतमगणधर गणनायक, की स्तुति में यह रची कृती।।
श्री वीर संवत् पच्चीस शतक, आषाढ़ शुक्ल षष्ठी की तिथी।
प्रभु वीर गर्भकल्याणक दिन, गणधर पद अर्पण किया कृती।।2।।
भगवान वीर मंगलमय हों, गौतम गणधर मंगलकारी।
श्री कुन्दकुन्द आचार्य तथा, जिनधर्म सदा मंगलकारी।।
महावीर प्रभू का जिनशासन, जब तक जग में जयशील रहे।
उन शिष्य प्रभू गौतम स्वामी, की वाणी भी जयशील रहे।।3।।

प्रयाग तीर्थ वंदना

-आर्यिका चन्दनामती

–शंभु छंद –

तीर्थ प्रयाग जगत में पहला, दीक्षा तीर्थ कहा जाता।
तीर्थंकर प्रभु ऋषभदेव की, दीक्षा से जिसका नाता।।
युग की आदी में ऋषभदेव ने, केशलोंच जहँ किया प्रथम।
जहाँ त्याग प्रकृष्ट किया उसका ही, नाम प्रयाग पड़ा उत्तम।।1।।

उसको वंदन करके प्रयाग की, महिमा का स्तवन करूँ।
प्राचीन तीर्थ को नया रूप, जो मिला उसे मैं नमन करूँ।।
जहाँ वर्तमान में गंगा यमुना, सरस्वती का संगम है।
इसके कारण ही महाकुंभ का, मेला लगता अनुपम है।।2।।

प्राचीन जैन इतिहास अगर, देखो तो समझ में आता है।
प्रभु ऋषभदेव के रत्नत्रय के, संगम की यह गाथा है।।
तुम सुनो यहाँ पर कई एक, घटनाएँ पहली बार घटीं।
उन रोमांचक इतिहासों से, तीरथ प्रयाग की कीर्ति बढ़ी।।3।।

युग का पहला था केशलोंच, पहली दीक्षा थी हुई जहाँ।
कैवल्य भूमि वह प्रथम, प्रथम था समवसरण वहाँ अधर बना।।
नृप वृषभसेन भी दीक्षा लेकर, प्रभु के गणधर प्रथम बने।
आर्यिका की दीक्षा वहीं प्रथमतः, ली थी ब्राह्मी-सुन्दरि ने।।4।।

बस इस प्रकार यह तीर्थ प्रथम, आध्यात्मिकता का केन्द्र बना।
इस भूमी से ही मोक्षमार्ग का, इस कृतयुग में मार्ग चला।।
जिस वृक्ष के नीचे ऋषभदेव ने, दीक्षा लेकर ध्यान किया।
वह अक्षयवट संज्ञा से तीर्थ-प्रयाग का अक्षयधाम हुआ।।5।।

इस नई सहस्राब्दि में उस, तीरथ प्रयाग में काम हुआ।
इक नई भूमि पर तपस्थली-तीरथ का नवनिर्माण हुआ।।

है शहर इलाहाबाद से तेरह, किलोमीटर पर यह तीरथ।
वाराणसि से सौ एक किलो-मीटर दूरी पर है स्थित।।6।।

देखो तो कितनी दूरी से, सुन्दर कैलाशगिरी दिखता।
उस इक्यावन फुट ऊँचे गिरि, कैलाश पे है मनहर प्रतिमा।।
चौदह फुट के उत्तुंग लाल-वर्णी वृषभेश विराज रहे।
झरने व गुफाओं से संयुत, पर्वत दर्शन का लाभ वरें।।7।।

है मुख्य यहाँ पर आकर्षण, दीक्षा कल्याणक का मंदिर।
उस शांत तपोवन में स्थित, ध्यानस्थ प्रभू प्रतिमा सुन्दर।।
सीढ़ी चढ़कर ऊपर जाओ, कुछ क्षण जिनवर का ध्यान करो।
सांसारिक क्षणभंगुर विषयों से, हटकर मन कुछ शांत करो।।8।।

छह माह योग के बाद प्रभू, आहार हेतु जब निकले थे।
हस्तिनापुरी में एक वर्ष, उपवास बाद वे पहुँचे थे।।
श्रेयांसराज ने इक्षूरस, आहार दिया था प्रथम जहाँ।
उस दिन से ही इस धरती पर, शुभ दानतीर्थ प्रारंभ हुआ।।9।।

दीक्षाकल्याण तपोवन के, दर्शन कर आगे बढ़ते हैं।
इक मंदिर में चढ़ करके, समवसरण का दर्शन करते हैं।।
ये दोनों मंदिर तीरथ की, सार्थकता को दरशाते हैं।
बीचों बिच गिरि कैलाश की यात्रा, कर यात्री हरषाते हैं।।10।।

इस तीर्थक्षेत्र के परिसर में, इक कीर्तिस्तंभ बना सुन्दर।
उसमें राजित हैं ऋषभदेव, महावीर की प्रतिमाएँ मनहर।।
कैलाशगिरी पर बने बहत्तर, जिनचैत्यालय को वन्दन।
वहाँ गुफा के मंदिर में अतिशयकारी जिनवर को करूँ नमन।।11।।

सब भगवन्तों के दर्शन वंदन, कर कुछ क्षण विश्राम करो।
वहाँ निर्मित सुन्दर अतिथि भवन में, रहकर प्रभु का ध्यान करो।।
है धर्मध्यान के साथ-साथ, वहाँ बने मनोरंजन साधन।
फूलों के उपवन-बाग-बगीचे, मानो करते प्रभु वंदन।।12।।

श्री गणिनीप्रमुख ज्ञानमति माताजी ने ही यह बतलाया।
इस दीक्षा तीर्थ प्रयाग का नूतन, परिचय सबको करवाया।।
उनके उपकारों से यह धरती, तीर्थ नये पा जाती है।
''चन्दनामती'' जिनधर्म की कीर्ति-पताका ये फहराती हैं।।13।।

—दोहा —

दीक्षा केवलज्ञान की, भूमी तीर्थ प्रयाग।
उस ही पावन धाम की, करूँ वंदना आज।।14।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–हम लाए हैं तूफान से......

हम आए हैं निगोद से, आशाएँ संजोके।
मानुष जनम को पाके, फिर निगोद न लौटें।। टेक.।।

केवल जनम मरण में ही, पर्याय बिताई।
कुछ पुण्य का संयोग, त्रस पर्याय अब पाई।।
शक्ती मिले चिन्तन करें, आतम मगन होके।
मानुष जनम को पाके, फिर निगोद न लौटें।।1।।

स्वर्गों के सुख भोगे, पशू की योनि भी पाई।
नरकों में रो-रोकर, वहाँ की आयु बिताई।।
नर तन प्रभो सार्थक करूँ, अब शांत मन होके।
मानुष जनम को पाके, फिर निगोद न लौटें।।2।।

सम्यक्त्व की महिमा से, आतम शुद्ध बनाऊँ।
शुभ देव शास्त्र गुरु के प्रति कर्त्तव्य निभाऊँ।।
फिर 'चंदनामति' क्रम से स्वर्ग मोक्ष भी होते।
मानुष जनम को पाके फिर निगोद न लौटें।।3।।